(न८वह्य

রবীন্দ্রনাথ ঠাকুর



বিশ্বভারতী গ্রন্থালয় ২ বন্ধিম চাটুক্সে স্থীট, কলিকাভা

প্রশ্ব আবাঢ় ১০০৮ প্রশ্ব প্র ১৯০৯, ১৯১৮, ১৯২১ বিশ্বভারতী প্রশ্ব প্র ১০০৫, ১০০৯, ১০৪০, প্রাবণ ১০৪৮ আন্মিন ১০৫০, প্রাবণ ১০৫২, ভাস্র ১০৫৫ বৈশাধ ১০৫৮

WEST BUNGAL CALCUTTA

প্রকাশক শ্রীপুলিনবিহারী সেন বিশ্বভারতী। ৬০০ বারকানাথ ঠাকুব লেন। কলিকাতা মুশ্রাকর শ্রীপ্রভাতচন্দ্র বায় শ্রীগোরান্ধ প্রেস। ৫ চিন্তামণি দাস লেন। কলিকাতা

এই কাব্যগ্রন্থ পরমপ্জাপাদ পিতৃদেবের শ্রীচরণকমলে উৎসর্গ করিলাম

चागाए ১৩०৮

সূচীপত্ৰ

षिषा अ उषार अत्र लाक-लाकासरत	•	6 9
व्ययदित मान्यम क्लिकि इंग्राहर	•	> 4
व्यक्तात गटर्ड शास्त्र व्यक्त मनीम्हन	•	*
व्ययम क्यम महर्ष करमत्र (कारम	•	२ २
षद्म महेशा थाकि, एाई यात्र	•	3 9
खांधार चारिएड दक्ष्मीत भीभ	•	₹ €
खाभारत चाव्छ घन गः नव	•	٤ ۶
चाघाडभःगाड-भारत नाष्ट्राहेश याणि	•	e 6-
चाकि दम्पास्त नामि वाभि ठत्राष्ट्र	•	98
व्यावात वायात हाटड वीना मान दुनि	•	હ
আমরা কোপায় আছি, কোধায় স্দৃবে	•	•
আমাৰ এ ঘরে আপনার করে	•	> <
ष्यामात्र এ मानरगत कानन काडान	•	≥6
यामात नक्न यद्य ट्यामात्र भत्र	•	Ŀ •
व्यामादत रुक्त कवि (१ महारुषान	•	94
आभि ভালোবাদি দেব, এই বাশালার	•	⊌ 8
এ यामात्र मदौरतत निताय निताय	•	৩ ٩
এ कथा मानित आभि, এक इट्ड छुडे ·	•	>>
এ কথা স্বরণে রাখা কেন গো কঠিন	•	63
এ তুর্ভাগ্য দেশ হতে হে মসলময়	•	(>
এ নদীর কলদানি যেথায় বাচ্ছে না	•	₽ €
क मुड़ा क्षिट इरव, क्रेड स्प्यान	•	43
এই পশ্চিমের কোণে রক্তরাগরেখা	•	77

এकना এ ভারতের কোন্ বনতলে	•	7 >
এकानारत कृभिने वाकान, कृभि मीफ	•	≥ ≤
जर्य भोनम्क, एकन चाहिम नौत्रव	•	b-२
करूना पुगानभूक चार्छ स्र स्ट्य	•	4 8
काटनात्र कथा नीमा भट्ड यथा	•	26
कार्य प्र नाहि क्य। यह कित मान	•	8 4
कालि शटण धरिशास भारन चारनाहरन	•	8 9
কোপ। হতে आगियाछि, नाहि পড়ে মনে	•	8 9
कार्या ना कार्या ना मध्या एक जायज्याणी	•	> 8
कर्भ भ्रान ३८४ चार्य नग्रान्य क्यां डि	•	8 •
गार्ड नर्भ भाष्टि यान्यना	•	৩ ২
िष तमया चित्रम्या, डिफ्ट तमया निष	•	७ ७
कीनद्भ भाषान गृह भामन	•	> 9
कौरत्नर भिष्ठभारत भिष्य य कर्न	•	> • •
क्थन किन निनाप, क्यारमा घारमाञ्चन	•	88
ত্র কাতে এই মোন শেষ নিবেদন	•	220
खन চন द्वान वाना वहना घटाना ख	•	9.3
ख्य भूषा ना व्यानित्य मध मित्य खात्य	•	a 2
তব প্রেমে দগ্য কুমি কবেছ মামাবে	•	\$ 5
छानि इय इर्ड निया एन इ:२५।व	•	bo
তাহাব। দেখিয়'ডেন — বিশ্বচন্যচন		৬৯
তুমি ভবে এফো নাথ, বশো শুভকণে	•	દ્
তুমি মোৰে অপিয়াছ যত অনিকাৰ	•	৬৬
তুমি স্বাশ্র্য, এ কি শুগু শ্রাকণা	•	69
তোমাৰ अभीटम প্ৰাণমন লয়ে	•	ર ક
ভোমাৰ ইঙ্গিভগানি দেখি নি যুগন	•	e 5

ट्याप्य सार्थेर एउ अस्टार्कर कर्य	•	ь 5	
खायाद नाखाका रात्र मान कार्य	•	3•	
ट्टामात जूदन-माद्य किति मुध्यम	•	8 2	
ट्टायानि नानित औरमनुष	•	\$ 3	
ट्डामादन नरमार्घ राना, भूग ११० थिए	•	2 •	
ट्यायादन मख्मा कदि कुछ कदि चिया	•	۶,	
कारम मारम नक्षित्य निका नियसीम	•	59	
मीर्घकाम यमानुष्ठि, या छ मीराकाम	•	1	
कुर्गम भर्भन खार्य भाष्य मः भान	•	49	
जुमिन धनार्थ दल धन प्रकरात	•	>	
स्माह व्यान प्राम स्थारित हो। १५ कान	•	C (p	
मा गणि मानर किंख मानर के डाड	•	bb	
मा तुरक्ष अपि तुरक्षि ८७ ६ १ त	•	2.9	
निक्रम मध्म-भारतः कालि ना रातमः	•	6.5	
निनीवनग्रन ८५१व दांच यान	•	> >	
প্ৰিভ ভাৰতে বুনি কেন জাগৰাণ	•	18	
भारे हें ल या कि मुद्दात मुह	•	> 6-	
स्टिनिन यापि ए कीरनयापी	•	> >	
श्रीहिनिन इन भाषा	•	5 >	
क्षा छ १ व मा सम्बा हिर्देशीय राष्ट्र	•	8 2	
वामनाएन अने करि मान एक नाएनन	•	> → →	
देवदानामात्रम मुक्ति, भाषामाद नय	•	8 >	
एक करिएड श्रा वृत ५८ए१	•	₹	
मभाएक नगद-मात्य भए इत्ड भर्	•	૭૭	
मल्वामीरमद्र द्वाभ ग मिरवह श्र वृ	•	4 4	
महादाक, कर्षक प्रक्री मिर्ड हर्व	•	86	

मार्क मार्क कड वात्र छावि कर्यहोन	•	9€
मार्क मार्क करू गर्व व्यवनाम व्यानि	•	7 • >
মাত্রেহবিগলিত শুকুকীরর্গ	•	e 7
मुक करता, मुक करता निमा श्रमः गात्र	•	>4
মৃত্যুও অক্সাত মোর। আজি তার তরে	•	2 • 2
यनि এ व्यामात्र क्रमग्रञ्गात्र	•	> •
गात्रा कार्छ खार्छ छाता कार्छ थाक्	•	₹•
रा ङिक रहामादा नदा रेभर नाहि मारन	•	4 5
শক্তিদন্ত আর্থলোড মারীর মতন	•	>••
मिक सात्र यां यां या दि भीनवः गम	•	2.4
শতाकीत रूर्व याजि तक्तमप-मात्य	•	91
मक्न गर्ग पृत्र कित्र भिव	•	> >
गःगात्र गत्व यम क्ट इ गग	•	36
मः मार्य भार्य वाश्याह एके घर्य	•	222
त्म উमात প্রকৃতিবর প্রথম অকণ	•	92
সে পরম পরিপূর্ণ প্রভাতের সাগি	•	96-
मिडे (छा প্রেমের গর্ব, ভক্তিব গৌবব	•	()
স্বার্থের সমাপি অপঘাতে। অক্সাং	•	9.5
ए व्यमम, राषा कृषि भागना-वकीक	•	> >
ह्म प्र इटेंटि म्न. इ निकरेंटम	•	8 %
हि जारक, जर निका मिरप्रह रा भन	•	200
ছে ভারত, নুপতিরে শিগায়েছ তুমি	•	> €
रह त्रारक्क, তব হাতে काम अवशीन	•	ۥ
হে বাজেন্দ্র, ভোমা-কাছে নত হতে গেলে	•	७२
इं गक्न प्रेष्ट्रत् भ्रम प्रेषत्	_	% Ь

(4(-10)

প্রতিদিন আমি হে জীবনস্বামী, দাঁড়াব তোমারি সম্পুথে। করি জ্বোড়কর হে ভ্রনেশর, দাঁড়াব তোমারি সম্পুথে।

ভোমার অপার আকাশের তলে বিজনে বিরলে হে, নম হৃদয়ে নয়নের জলে দাঁড়াব ভোমারি সম্মূণে।

তোমার বিচিত্র এ ভবসংসারে কর্মপারাবার-পারে হে, নিখিল-জগভ-জনের মাঝারে দাঁড়াব ভোমারি সম্মুখে।

> ভোমার এ ভবে নোর কাঙ্গ যবে সমাপন হবে হে, ওগো রাজবাজ, একাকী নীরবে দাঁড়াব ভোমারি সম্মুখে।

আমার এ ঘরে আপনার করে
গৃহদীপথানি জ্বালো।
সব তথ্পাক সার্থক হোক
লভিয়া ভোমারি আলো।

কোণে কোণে যত লুকানে। আঁধার
মরুক ধতা হয়ে,
ভোমারি পুণ্য আলোকে বসিয়া
প্রিয়ন্ধনে বাসি ভালো।
আমার এ ঘরে আপনার করে
গৃহদীপথানি জালো।

পরশমণির প্রদীপ তোমার গচপল তার জ্যোতি, সোনা কবে নিক পলকে আমার সব কলক্ষ কালো। আমাব এ ঘরে আপনাব কবে গৃহদীপথানি ছালো।

আমি যত দীপ জালি শুধু তার জালা আব শুধু কালি— আমার ঘবের ত্য়াবে শিয়রে তোমাবি কিবণ ঢালো। আমার এ ঘরে আপনার কবে গৃহদীপথানি জালো। 9

নিশীপশয়নে ভেবে রাখি মনে
ওগো অন্তর্যামী,
প্রভাতে প্রথম নয়ন মেলিয়া
ভোমারে হেরিব আমি,
ওগো অন্তর্যামী।

জাগিয়া বসিয়া শুল্র আলোকে তোমার চরণে নমিয়া পুলকে মনে ভেবে রাখি, দিনের কর্ম ভোমাবে সঁপিব স্বামী, ভুগো অস্থ্রযামী।

দিনের কর্ম সাধিতে সাধিতে করেণ করেণ করেণ ভাবি মনে কর্ম-অত্যে সন্ধাবেলায বসিব ভোমার সনে।

मक्तारितलाय जावि वरम घरत,

राज्यात निर्माथ-विद्राय-भागरत

जान्य প্রাণেব जावना-विद्राय

नीत्रव याहरव नाधि,

राजा वान्यत्रयायो।

তোমারি রাগিণী জীবনকুলে

বাজে যেন সদা বাজে গো।

তোমারি আসন সদারপদ্মে

রাজে যেন সদা রাজে গো।

তব নন্দন-গন্ধ-মোদিভ
ফিরি স্থানর ভূবনে
তব পদরেণু মাখি লয়ে ভন্ন
সাজে যেন সদা সাজে গো।
ভোমারি রাগিণী জীবনকুঞ্জে
বাজে যেন সদা বাজে গো।

সব বিদেষ দূরে যায় যেন তব মঙ্গলমন্ত্রে, বিকাশে মাধুরী হাদয়ে বাহিরে তব সংগীতছন্দে।

> তব নির্মল নীরব হাস্তা হেরি অম্বর ব্যাপিয়া, তব গৌরবে সকল গর্ব লাজে যেন সদা লাজে গো। ভোমারি রাগিণী জীবনকুঞ্জে বাজে যেন সদা বাজে গো।

বদি এ আমার হৃদয়হয়ার
বদ্ধ রহে গো কভূ
দার ভেঙে ভূমি এসো মোর প্রাণে,
ফিরিয়া বেয়ো না, প্রভূ।

यि कारना मिन এ वीनात जारत जव जित्रनाम नाशि यःकारत मग्रा करत्र ज्ञि करनक मांजारगा, कित्रिया (यरगा ना, अञ् ।

> जिव जास्तारन यिष कर् भाव नाहि एटएक याग्र श्रुशित खात वक्ररविषय काशारमा जामाग्र, कितिया (यरमा ना, व्यङ् ।

यि किति। पिन छामात्र व्यामतन व्यात्र-काशात्रिध वमाशे यण्डत जित्रपिवरमत रश् त्राक्षा व्यामात्र, कितिया (यर्या ना, व्यञ् । সংসার যবে মন কেড়ে লয়
জাগে না যখন প্রাণ
ভখনো হে নাথ প্রণমি ভোমায়
গাহি বসে ভব গান।

অন্তর্যামী, ক্ষমো দে আমার শৃত্যমনের রথা উপহার— পুস্পবিহীন পূজা-আয়োজন, ভক্তিবিহীন তান, সংসার যবে মন কেড়ে লয় জাগে না যথন প্রাণ।

ভাকি তব নাম শুক কঠে, আশা করি প্রাণপণে, নিবিড় প্রেমের সরস বর্ষা যদি নেমে আসে মনে।

সহসা একদা আপনা হইতে
ভরি দিবে তুমি ভোমার অমৃতে
এই ভরসায় করি পদতলে
শৃত্য হৃদয় দান,
সংসার যবে মন কেড়ে লয়
জাগে না যখন প্রাণ।

জীবনে আমার যত আনন্দ পেয়েছি দিবসরাত সবার মাঝারে ভোমারে আজিকে শ্বিব, জীবননাথ।

যে দিন ভোমার জগং নির্নাণ হরষে পরান উঠেছে পুলকি সে দিন আমার নয়নে হয়েছে ভোমারি নয়নপাত। সব আনন্দ-মাঝারে ভোমারে শ্বরিব, জীবননাথ।

> বার বার তুমি আপনার হাতে বাদে গদ্ধে ও গানে বাহির হইতে পরশ করেছ অন্তর-মাঝ্রানে।

পিতা মাতা ভাতা প্রিয়পরিবার, মিত্র আমার, পুত্র আমার, সকলের সাথে জদয়ে প্রবেশি তুমি আছ মোর সাথ। সব আনন্দ-মাঝারে তোমারে শ্বিব, জীবননাথ। কাব্যের কথা বাঁধা পড়ে যথা ছন্দের বাঁধনে পরানে ভোমায় ধরিয়া রাখিব সেইমতো সাধনে।

> কাঁপায়ে আমার হৃদয়ের সীমা বাজিবে তোমার অসীম মহিমা, চিরবিচিত্র আনন্দরূপে ধরা দিবে জীবনে, কাব্যের কথা বাঁধা পড়ে যথা ছন্দের বাঁধনে।

আমার ভুক্ত দিনের করে ভূমি দিবে গরিমা, আমার ভন্নর অণুতে অণুতে রবে তব প্রতিমা।

> সকল প্রেমের স্নেহের মাঝারে আসন সঁপির হৃদয়রাজারে, অসীম তোমার ভ্রনে রহিয়া রবে মম ভরনে, কাব্যের কথা বাঁধা রহে যথা ছন্দের বাঁধনে।

ना व्रवंध व्याप्ति व्रवंधि जामारत रक्मान किछू ना व्यानि। व्यर्थत्र (व्यव शाहे ना, उत्ध व्रवंधि जामात्र वाली।

निषातम भात्र नित्मत्वत्र भारक रुक्ता-त्वमना-जावना-आघारक रुक्त त्मग्र मर्व भत्नीरत्र ७ मरन ज्व मःवाम जानि।

> ना तुरमञ्जानि तुरमञ्जाना द्वारम रक्ष्यान किछू ना खानि।

তব রাজ্ব লোক হতে লোকে, সে বারতা আমি পেয়েছি পলকে কদি-মাঝে যবে হেবেছি তোমার বিশের রাজধানী। না বুঝেও আমি বুঝেছি তোমারে কেমনে কিছু না জানি।

আপনার চিতে নিবিড় নিভতে
যেথায় তোমারে পেয়েছি জানিতে
সেথায় সকলি স্থির নির্বাক্
ভাষা পরাস্ত মানি।
না বৃক্ষেও আমি বৃক্ষেছি ভোমারে
কেমনে কিছু না জানি।

যারা কাছে আছে তারা কাছে থাক্, তারা তো পাবে না জানিতে তাহাদের চেয়ে তুমি কাছে আছ আমার হৃদয়থানিতে।

যারা কথা বলে তাহারা বলুক,
আমি কাহারেও করি না বিমুখ,
তারা নাহি জানে— ভরা আছে প্রাণ
তব অকথিত বাণীতে।
নীরবে নিয়ত রয়েছ আমার
নীরব হৃদয়খানিতে।

তোমার লাগিয়া কারেও হে প্রভু, পথ ছেড়ে দিতে বলিব না কভু, যত প্রেম আছে সব প্রেম মোরে তোমা-পানে রবে টানিতে। সকলের প্রেমে রবে তব প্রেম আমার হৃদয়খানিতে।

> সবার সহিতে তোমার বাঁধন হেরি যেন সদা এ মোর সাধন, সবার সঙ্গে পারে যেন মনে তব আরাধনা আনিতে। সবাব মিলনে তোমার মিলন জাগিবে হৃদয়খানিতে।

আঁধারে আর্ভ ঘন সংশয় বিশ করিছে গ্রাস, ভারি মাঝ্ধানে সংশয়াভীভ প্রভায় করে বাস।

বাকোর ঝড়, ভর্কের গুলি, অন্ধ বৃদ্ধি ফিরিছে আকুলি, প্রভায় আছে আপনার মাঝে— নাহি ভার কোনো ত্রাস।

সংসারপথে শত সংকট

ঘূরিছে ঘূর্ণবায়ে,
তারি মাঝখানে অচলা শাস্থি
অমরতক্ষজায়ে।

निन्मा ७ क्षिति, मृद्धा नित्रह, कड निष्ठां । উट्ड क्ष्टत्रह— क्रित यागामत्न हित्र-क्षानम्म, ভাহার নাহিকো নাশ। অমল কমল সহজে জলের কোলে আনন্দে রহে ফুটিয়া; ফিবিতে না হয় 'আলয় কোথায়' ব'লে ধূলায় ধূলায় লুটিয়া।

তেমনি সহজে আনন্দে হব্যতি
তোমাৰ মাঝাৰে বৰ নিমগ্ৰচিত,
পূজাশতদল আপনি সে বিকশিত
সব সংশয় টুটিয়া।

কোথা আছ তুমি পথ না খুঁ জিব ক ছু, শুধান না কোনো পথিকে। ভোমানি মাঝাবে প্রমিব ফিনিন প্রভু, যখন ফিনিব যে দিকে।

> চলিব যখন ভোমাব তাকাশগৈছে ভব আন-দ-প্রবাহ লাগিবে দেহে, ভোমাব প্রম স্থাব মতন স্নেহে ব্যেক আসিবে ছুটিয়া।

मकल गर न्र कित निर्-डामान गर छाछिन ना। मनारत छाकिया किति, य भिन भार डर भन्दराक्रा।

ত্ব অহ্বান অ'সিবে যখন
সে কথা কেমনে কবিব গোপন।
সকল বাকো সকল করে
প্রকাশিবে তব অবোধনা।
সকল গব দ্ব কবি দিব,
গোমাব গব ভাডিব না।

य । या व्याचि (भाराष्ट्रि) य कार्ष्य भ भिने भक्ति याति भृति। स्पृ १त भाने (भारा भारा भारा वाष्ट्रिश) हेरित এक स्नति।

পথেব পথিক সেও দেখে যাবে তোমার বাবতা মোব মুখভাবে ভবসংসার-বাতায়ন হলে বসে রব যবে অনমনা। সকল গর্ব ক্রি দিব, ভোমার গ্র্ম তাড়িব না। ভোমার অদীমে প্রাণমন লয়ে

যত দূবে আমি যাই

কোথাও ছঃখ, কোথাও মৃত্যু,

কোথা বিচ্ছেদ নাই।

भूका (म भरत भूकात कल, पूश्च (म इस प्रश्चन क्ल, प्रभा करक यरन चक्क करस जालनात लारन होई।

হে পূর্ণ, তব চবণেব কাছে
যাহা কিছু সব আছে আছে আছে—
নাই নাই ভয়, সে শুধু আমাবি,
নিশিদিন কাঁদি তাই।

সক্রয়ানি সংসাবভাব পলক ক্লিতে কোথা একাকার ভোমার স্বলপ জীবনের মাঝে বাথিবারে যদি পাই। द्याधाव व्याभित् । त्रञ्जीत भील (व्याणिक यङ्ख्या — निवाद (व भन, व्याष्ट्र मिन्दास भक्ष प्राव स्ता

আজি মোৰ ঘরে জানি না কখন প্রভাত কৰেছে ববিব কিরণ, মাটিব প্রদীপে নাই প্রযোজন, ধূলায় হোক সে দুলি। নিবাও রে মন, রজনীব দীপ সকল ত্যাব গুলি।

> वार्था ब्राप्था आक कुलिएमा भा खुन किन्न वीपात शार्थ। भोतर्थ त्र भग, में छा ७ ज्याभिमा ज्याभग वार्थिय-भारत।

শুন আজি প্রতে সকল আকাশ সকল আলোক সকল বাতাস তোমার হইয়া গাহে সংগাঁত বিরাট কঠ হুলা। নিবাও নিবাও রক্ষনার দীপ সকল তুয়ার পুলি। ভক্ত কৰিছে প্ৰভ্ৰ চৰণে জীবন সমৰ্পণ— ভবে দীন, গৃই জোডকৰ কৰি কৰ্ ভাষা দৰশন।

भिन्तित भाता পि छित । इन्हें स्ति, ति इस १८० अस्ड न्हें ता, इं १८० भाषां वित्रा निष्मा निष्टा ति उं १८० मार्थां वित्रा । अङ्गे कि तिर्ह्ण श्रेत प्रतिश्व ज्ञातन भग्नेन।

> ७५ .य आरनाक भएफर जाणान प्रेमान नाना उर्प्याल, अथा ३१० शनि इक्षिनिश्चा भक्ष आथाय इसा

চাবি বিকে তাব শাণিসাগ্র স্থিব হয়ে আছে তিবি চবাচৰ, ক্ষণকাল- হবে দাঁড়াও বে তাঁকে, শাস্ত কবো বে মন। ভাক্ত কবিছে প্রভ্র চবণে জীবন সমপ্র। सञ्च लहेगा पाकि छाडे प्राप्त याद। याप छाडा याथ। क्लाक्रेक् यानि द्याताथ छा लाग व्यान दात दाय-दाय।

নদীত উসম কেবলি রুথাই
প্রবাহ আঁকে জি বাখিবারে চাই,

একে একে বুকে আগাত কবিয়া

ভেটিগুলি কেপা ধায়।

অল্লেইয়া পাকি শাই মান

যাহা যায় এহা যায়।

यां हो यां यां यां यां हो कि है है। के मत यां कि कि में लिया . डायां के डायां के डायां के वित्र यां है कि यां अपना . के इस नियां वां के दान स्थान स्थान स्थान ।

ভোষাতে র্যেতে কত শশী ভাগ,
কভু না তারায় অণু প্রমণ্য,
আমার কৃদ্র তারাধনগুলি
ব্রে না কি তের পাম।
অল্লেইয়া থাকি তেই মোর
যাতা যায় ভাতা যায়।

36

भागात यात्र मुड़ात मृड यामात यात्रत घात्त, उन याद्याम कित मिनडम भाग द्राय अस भारत।

আজি এ বজনা তিমিব-আধাব,
ভিগভাবা চুব কলেয় আমাব,
তেবু দাঁপি হাতে থুকা দিয়া দাব
নিম্যা লাইব তাবে।
পাচাইলো আজি মৃত্যুব দুও

প্জিন ভংগারে জোডকন কবি বার্কে ন্যন্ত্রেল, প্জিন ভাগারে প্রানেন ধন স্পিয়া চরণ ভ্রেল।

আদেশ পালন কৰিয়া ভোমাৰি

যাৰে সে আমাৰ প্ৰভাত আধাৰি,

শ্বা ভবনে ৰসি তৰ পায়ে

অপিৰ আপনাৰে।

পাঠাইলৈ আজি মৃত্যৰ দূত

আমাৰ ঘৰেৰ দ্বাহৰ।

প্রতিদিন ভব গাধা গাব আমি সুমধ্র— ভূমি মাবে দাও কবা, ভূমি মাবে দাও কবা,

> क्षियि विकास भारत रिक्छ क्षेत्राम्यः कृषियान कर लाग कर अस्य जानजूर ---व्रिक्ति कर जाना जान वर्षि सुमन्ता

क्षि यभि भाग गान व्यामान भग्देश धानिः, व्यामा यभि नद्द भाग देशमान देशिन देशिः,

তুমি যদি ত্থ- পিৰে

রাথ হাও এইছেভাবে,
তুমি যদি পুথ হতে

দম্ভ কৰছ দ্ব—
প্রতিদিন তব গাপা
গাব আমি স্থমধুর।

তোমার পতাকা যারে দাও তারে বহিবারে দাও শক্তি। তোমার সেবার মহং প্রয়াস সহিবারে দাও ভক্তি।

আমি তাই চাই ভরিয়া পরান
তঃথেরি সাথে তঃথের ত্রাণ,
তোমার হাতের বেদনার দান
এড়ায়ে চাহি না মুক্তি
ত্থ হবে মোর মাথাব মানিক
সাথে যদি দাও ভক্তি।

যত দিতে চাও কাজ দিয়ো যদি তোমারে না দাও তুলিতে— অন্তর যদি জড়াতে না দাও জালজঞ্চালগুলিতে।

বাঁধিয়ো আমায় যত খুশি ভোরে,
মুক্ত রাখিয়ে৷ তোমা-পানে মোরে,
ধুলায় বাখিয়াে পবিত্র ক'বে
ভোমার চবণন্লিতে।
ভূলায়ে বাখিয়াে সংসারতলে,
ভোমারে দিয়াে না ভূলিতে।

যে পথে ঘুরিতে দিয়েছ ঘুরিব,
যাই যেন তব চরণে।
সব শ্রম যেন বহি লয় মোরে
সকল-শ্রাস্থি-হরণে।

তুর্গমপথ এ ভবগহন,
কত তাগি শোক বিবহদহন,
জীবনে মবণ করিয়া বহন
প্রাণ পাই যেন মবণে।
সন্ধাবেলায় লভি গো কুলায়
নিবিল্লারণ চরণে।

ঘাটে বসে আছি আনমনা,

যেতেছে বহিয়া স্থসময়।

এ বাহাসে ভরী ভাসাব না
ভোমা-পানে যদি নাহি বয়।

দিন যায় ওগো দিন যায়,

দিনমণি যায় অতে।

নাহি হেরি বাট, দ্রভারে মাঠ
প্সর গোধৃলি-ধৃলি-ময়।

ঘরের ঠিকানা হল না গো,
মন করে তব্ যাই-যাই।
গ্রুবতারা তুমি যেথা জাগ'
সে দিকের পথ চিনি নাই।
এত দিন ত্রী বাহিলাম,
বাহিলাম ত্রী যে পথে,
শতবার ত্রী তুর্তুর্ কবি
সে পথে ভ্রুমা নাহি পাই।

তীর-সাথে হেবো শত ডোরে
বাঁধা আছে মোর তবীখান।
রশি খুলে দেবে কবে মোরে—
ভাসিতে পারিলে বাঁচে প্রাণ।
কোথা বুকজোড়া খোলা হাওয়া,
সাগরের খোলা হাওয়া কই।
কোথা মহাগান ভরি দিবে কান,
কোথা সাগরের মহাগান।

समारक नगर-सारक পश्च इत्छ भाष कर्मवका भाग यत छेळिलि । ज्ञात इ म । माथा-প्रमाथाग्र— नगरत नाड़ी छेत्र को ७ ७५ इत्या, नात्र भ भाषाड़ि भाषानि छित्र भित्र— को भिक्ष भाक्ष भि भाग भाष, इत्ये तथ, छेत्र एक इक्ष मृलि -

তথন সহসা হেবি মৃদিয়া নয়ন
মহাজনারণা-মাঝে অন্থ নিজন
ভোমার আসনগানি — কোলাহল-মাঝে
ভোমার নিংশক সভা নিস্তর্কে বিরাজে।
সব তাথে, সব অথে, সব ঘরে ঘরে,
সব চিত্তে সব চিঞা সব চেষ্টা-'পরে
যত দূর দৃষ্টি যায় শুরু যায় দেখা
তে সক্ষবিহীন দেব, তুমি বসি একা।

আজি হেমন্তের শান্তি ব্যাপ্ত চবাচরে।

জনশৃত্য ক্ষেত্র-মাঝে দীপু দিপ্রহরে
শক্ষান গতিহীন স্তক্ষতা উদার
রয়েছে পড়িয়া প্রাস্ত দিগস্থপ্রসাব
সর্ণগ্রাম ভানা মেলি। ক্ষীণ নদীবেথা
নাহি করে গান আজি, নাহি লেখে লেখা
বাল্কাব ভটে। দূরে দূবে পল্লী যভ
মুজিভনয়নে রৌদ্র পোহাইতে বভ
নিদ্রায় অলস ক্রাস্ত।

এই স্থানতায় শুনিভেছি তৃণে তৃণে ধুলায় ধুলায় মোৰ অঙ্গে বোমে বোমে, লোকে লোকান্তরে গ্রহে সূর্যে তারকায় নিতাকাল ধ'বে অণুপ্ৰমাণুদ্ৰে নৃত্যকলবোল— ভোমাৰ আসন যেরি অন্ত কল্লোল। मारक मारक कड वाज छावि, कर्मशैन याक नहें इन रदना, नहें इन निन।

> > প্রভাতে জাগিয়া উঠি মেলিও নয়ন; দেখিয়া ভরিয়া আতে আমার কানন।

আবার আমার হাতে বীণা দাও তুলি, আবার আমুক ফিরে হারা গানগুলি।

সহসা কঠিন শীতে মানসের জলে
পদ্মবন মরে যায়, হংস দলে দলে
সারি বেঁধে উড়ে যায় স্থান্ন দক্ষিণে
জনহান কাশফুল্ল নদীর পুলিনে;
আবার বসত্তে তারা ফিরে আসে যথা
বহি লয়ে আনন্দের কলম্থরতা—

তেমনি আমার যত উদ্য়ে-যাওয়া গান আবার আমুক ফিরে মৌন এ পবান ভরি উতরোলে; তারা শুনাক এবাব সমুদ্রতীরের তান, অজ্ঞাত রাজার অগম্য রাজ্যের যত অপরূপ কথা, সীমাশৃশ্য নির্জনের অপূর্ব বারতা। এ আমার শরীরের শিবায় শিরায়
যে প্রাণ্ডরক্ষমালা বাত্রিদিন ধায়
সেই প্রাণ ছবিয়াছে বিশ্বনিষ্কিয়ে,
সেই প্রাণ অপরূপ ছবেন গালে লয়ে
নাচিতে ভ্রনে— সেই প্রাণ চুপে চুপে
বস্তধার য়তিকার প্রতি রোমকৃপে
লক্ষ লক্ষ ভূণে ভূণে স্কারে হর্ষে,
বিশ্বনাপী জন্মমৃত্যু-সম্দ্র-দোলায়
ছলিতেতে অভ্নীন জোয়ার-ভাটায়।
করিতেতি অফ্ভব, সে অন্যু প্রাণ
অক্ষে অক্ষে আমারে করেছে মহীয়ান।

भित्रे युगगुगार्यत वितार स्मान्धन स्थानात नाष्ट्रीर सामिक करिएक नर्छन। দেহে তাব মনে প্রাণে হয়ে একাকার এ কী তাপকপ লীলা এ অঙ্গে আমার।

এ কী জ্যোতি, এ কী ব্যোম দীপ্তদীপ-ছালা দিবা আর রজনীর চিরনাট্যশালা। এ কী স্থাম বস্তমরা, সমুদ্রে চঞ্চল, পর্বতে কঠিন, তরু-পল্লবে কোমল, অবণ্যে আধাব। এ কী বিচিত্র বিশাল অবিশ্রাম রচিতেছে সজনের জাল আমার ইন্দ্রিয়যন্ত্রে ইন্দ্রজালবং। প্রত্যেক প্রাণীব মাঝে প্রকাণ্ড জগং।

ভোমাবি মিলনশ্যাা, হে মোব বাজন, কৃদ্র এ সামাব মাঝে অনন্ত সাসন অসীম বিচিত্রকান্ত। ওগো বিশ্বভূপ, দেহে মনে প্রাণে আমি এ কী সপ্রপ। कृति उदय धरमा नाथ, रामः खड्यान प्राप्त भरन गाथा धरे मर्गामाना।

> भाग छ नग्रान नाल এই नीलाश्रत कारना लुश नास्त्रा ना भाग कारता १८०, भागात भागरत रेलरल काश्रात कानरन, भागात कार्य १९८३, भक्रान निकान।

ज्ञारसायल निर्माणन निरम अध्य अध्य सामरम निर्माण गोषा छ। गारमान-ंभरन निरमा कृषि मास्थारन। माधिनम छ। छ सामान स्थान छ एम, डे। इन्छ नुमाछ मक्स स्थित भिरन, जामोज (आप) मधुत मक्सकर्म कृषि अस्म। (सरम।

> भक्ष भ भावत्य वक्ष निष्ठान ट्याय महान पृष्ठि पाक् वार्यिनन ।

ক্রমে শ্লান হয়ে আসে নয়নের জ্যোতি
নয়নতারায়; বিপুলা এ বস্থমতী
ধীরে মিলাইয়া আসে ছায়ার মতন
লয়ে তার সিন্ধু শৈল কান্তার কানন;
বিচিত্র এ বিশ্বগান ক্ষীণ হয়ে বাজে
ইন্দ্রিয়বীণার স্ক্র শততন্ত্রী-মাঝে;
বর্ণে বর্ণে সুরঞ্জিত বিশ্বচিত্রখানি
ধীরে ধীরে মৃত্ হস্তে লও তুমি টানি
সর্বাঙ্গ হৃদেয় হতে; দীপ্ত দীপাবলী
ইন্দ্রিয়ের দ্বারে দ্বারে ছিল যা উজ্জ্বলি
দাও নিবাইয়া; তার পরে অর্ধরাতে
যে নির্মল মৃত্যুশয্যা পাত নিজহাতে—

সে বিশ্বভ্রনহীন নিঃশন্ত আসনে একা তুমি বসো আসি প্রম নির্জনে।

दिवागामाध्यम मुङ्गि, य आमात नय।

অসংখ্য বন্ধন-মাঝে মহানন্দময়
লভিব মুক্তির স্বাদ। এই বস্থার
মৃত্তিকার পাত্রখানি ভরি বারস্থার
ভোমার অমৃত ঢালি দিবে অবিরত
নানা-বর্ণ-গন্ধ-ময়। প্রদীপেব মতে।
সমস্ত সংসার মোর লক্ষ বভিকায়
ভালায়ে তুলিবে আলো ভোমারি শিখায়
ভোমার মন্দির-মাঝে।

ইন্দ্রিয়ের দ্বার কদ্ধ করি যোগাসন, সে নতে আমার। যে-কিছু আনন্দ আছে দুশ্চে গদ্ধে গানে ভোমার আনন্দ রবে ভার মাঝ্যানে।

> भाग भाग मुख्यित पिति विविद्या, भाग भाग ভिक्तित पिति किया।

তোমার তুবন-মাঝে ফিরি মৃশ্বসম
তে বিশ্বমোহন নাথ। চক্ষে লাগে মম
প্রশান্থ আনন্দঘন অনন্ত আকাশ;
শবংমধ্যাহে পূর্ণ স্থবর্ণ-উচ্ছাস
আমার শিরার মাঝে করিয়া প্রবেশ।
মিশায় রক্তের সাথে আতপ্ত আবেশ।

ভুলায় আমারে সবে। বিচিত্র ভাষায় ভোমার সংসাব মােবে কাঁদায় হাসায়; ভব নবনারী সবে দিখিদিকে মােবে টোনে নিয়ে যায় কত বেদনাব ভারে, বাসনাব টানে। সেই মাের মৃগ্ধ মন বাণাসম তব অক্ষে কবিলু অপণ— ভাব শত মােহতক্ত্রে কবিয়া আঘাত বিচিত্র সংগীত তব জাগাও তে নাথ। নির্কন শয়ন-মাঝে কালি রাজিবেলা ভাবিতেছিলাম আমি বসিয়া একেলা গভজীবনের কত কথা, তেন কণে শুনিলাম, তুমি কহিতেছ মোব মনে —

> 'ওবে মতা, ওরে মৃদ্ধ, ওবে অংশং ভালা, রেখেছিলি আপনার সব হাব খালা— চঞ্চল এ সংসারেব যত ছায়ালোক, যত ভুল, যত ধূলি, যত ছংখলোক, যত ভালোমন্দ, যত গাঁতগদ্ধ লয়ে বিশ্ব পশেছিল তার অবাধ আলয়ে। সেই সাথে ভোর মৃক্ত বাভায়নে আমি অজ্ঞাতে অসংখা বার এসেছিও নামি।

> > स्नात कि भि छि भि शि शि शिव नि मि । कान भि शि शि शिव कि है सि भि शि ।

তথন কৰি নি নাথ, কোনো আয়োজন;
বিশ্বের সবার সাথে তে বিশ্ববাজন,
অজ্ঞাতে আসিতে হাসি আমাৰ অন্তবে
ক ৩ শুভদিনে, ক ৩ মুহুর্তেন 'পরে
অসামেন ডিচ্চ লিথে গেছ। লই তুলি
গোমার স্বাক্ষন-আনা সেই ক্ষণগুলি—
দেখি ভাবা স্বৃতি-মান্যে আছিল ছড়ায়ে
ক ৩-মা ধলিন সাথে, আছিল জড়ায়ে
ক গিকেন ক ৩ ১০ছ স্বুখত্বা থিরে।

তে নাথ, অবজ্ঞা কৰি যাও নাই ফিবে আমাৰ সে ধুলাওপ খেলাঘৰ দেখে; খেলা-মাঝে শুনিতে পেযেছি থেকে থেকে যে চৰণধ্বনি, আজ শুনি তাই বাজে জগং-সংগীত-সাথে চন্দ্রস্থি-মাঝে। কাবে দূব নাহি কব। যত কবি দান
তোমাৰে জন্য মম ৩৩ হয় স্থান
সবাবে জাইতে প্ৰাণে। বিজেষ মেখানে
হাব হতে কাবেও ভাডায় অপামানে
হোম সেই-সাপে যাও, মাগা অহ কাব
হণাভবে ফুলজানে কান্ধ কবে হাব সেপা হতে ফিব হুমি, ইংলা চি ওকোণে
বিসি বিসি ভিল্ল কবে এমাবি আমানে
ভপ্ল শুলো। হুমি পাক মেপায় সবাই
সহজে পুঁজিয়া পায় নিজ নিজ গৈই।

> कृष्ट नाष्ट्र घाटम गर्न इंश ऐफन्त ठांकि करूठ, भरत गांच, भूरन गांच भर्नां महानाष्ट्र, कृष्टि गर्न এम (महे-मांच मिन्निल छग्द घाटम (हामानि लन्हार)।

कामि शास्त्र भित्रशास्त्र भारत आस्त्राहरत यर्गताहि करिं शिव नम्बन-मरनः; यानस्मित निम्नशास्त्र आणि वर्ष्ट वर्ष्य यिति शासिकाम गर्व निष्ठ यानस्य मैं। शर्ष्य याभात यक्ता । नीडवास नुसारना स्मर्थन श्रष्ट उस कास्त्र भारतः गुरुर्ध उपका वर्ष्य भाष्टि यानि मिसा।

> নুহার্থই মৌন হল স্তব্ধ হল হিয়া নিধাণপ্রদাপ বিক্ত নাট্যশালা সম। চাহিয়া দেখিয়ু উপ্ব-পানে: চিত্ত মম নুহার্থই পাব হয়ে অসীম রজনী দাঁচালো নক্ষত্রলোকে।

> > হেবিন্য তথান— থেলিতেছিলাম মোবা অকু সিত মনে তবঁ স্তব্য প্রাসাদেব অনন্য প্রাস্থান।

কোপা হতে আসিয়াছি, নাহি পড়ে মনে, অগণা যাত্রীর সাথে ভীর্ধদরশনে এই বস্তুক্রান্তলে, লাগিয়াছে ত্রী নীলাকাশসমূদের ঘাটের উপরি।

> खना याय छाति निर्क निरम्बद्धना दाख्रिट्ड विवाउं म भातमध्यस्ति लक्ष लक्ष छोत्नक्ष्कार्य । এ॰ द्वला याडी न्तन्ति-भ द्व क्रिया ७ द्वला भृतो खाद्य भाष्ट्र लाला-'भद्र । स्नाद्र भाद्र चभवाडु छुद्य इल शद्द श्रामिशाद्य ।

> > এখন মন্দিরে তব এসেছি ত নাপ, নিজনে চৰণ হলে কবি প্রনিপাত এ জ্মেব পূজা সমাপিব। তাব পর নবতার্পে যেতে হবে তে বসুদেশব।

মহারাজ, ফণেক দর্শন দিতে হবে
তথানার নিজন ধামে। সেথা ডেকে লবে
সমস্ত গ্রালোক হতে ভোমার গ্রালোতে
ভামোরে একাকী -- সর স্তথ্য হতে,
সর সঙ্গ হতে, সমস্ত এ রম্ভরার
কর্মরিক্ষ হতে। দের, মন্দিরে ভোমার
প্রিয়াতি পুথিবীর সর্ব যাত্রী-সন্দে
দ্বার মৃক্ত ভিল্ন যবে আর্ভির ফণে।

मीलावली भिनादेशा छटल गाटन यटन भाभा लटल माना घटन পुद्धाकना मटन, द्यान कन्न द्राय याटन, मास्य अक्षकान व्यामाटन भिलादा जिटन छन्दल छामान।

> একথানি জীবনেব প্রদীপ কুলিয়া তোমাবে হেবিব একা তুবন তুলিয়া।

প্রভাতে যথন শন্ধ উঠেছিল বাঞি ভোমার প্রাঞ্চন গল, ভবি লয়ে সাঞ্চি চলেছিল নবনাবী গ্রেয়াগিয়া ঘর নবীন শিশিরসিক্ত গুঞ্জনমূখর স্মিম বনপথ দিয়ে। আমি অক্সমনে স্থনপল্লবপুঞ্জ ছায়াকুঞ্জবনে ছিন্তু শুয়ে গুণান্তীর্ণ ভবিশিশী শৈরে। বিহঞ্জের কলগীতে শুমন্দ সমারে।

আমি যাই নাই দেব, শোমাব পূজায়।
চয়ে দেখি নাই পথে কারা চলে যায়।
আজ ভাবি, ভালো হয়েছিল মোর ভূল,
তথন কুমুমগুলি আছিল মুকুল—

হেবো, তাবা সাবা দিনে ফুটিতেতে আজি। অপরাত্রে তবিলাম এ পুজাব সাজি।

ट्र त्राष्ट्रम्, उव शए काल अस्टीन।

গণনা কেহ না করে, রাত্রি আর দিন
আসে যায়, ফুটে ঝরে যুগযুগান্তরা।
বিলম্ব নাহিকো তব, নাহি তব হরা—
প্রতীক্ষা করিতে জান। শত বর্ষ ধ'রে
একটি পুপ্পের কলি ফুটাবার তরে
চলে তব ধার আয়োজন। কাল নাই
আমাদের হাতে; কাড়াকাড়ি করে তাই
সবে মিলে, দেনি কানো নাহি সহে কভু।

সাগে তাই সকলের সব সেবা প্রভু, শেষ করে দিতে দিতে কেটে যায় কাল— শৃষ্য পড়ে থাকে হায় তব পূজাথাল।

> অসময়ে ছুটে আসি, মনে বাসি ভয়— এসে দেখি, যায় নাই তোমার সময়।

टामात रेकिडशानि पिधि नि यथन थ्लिम्षि ছিল তারে করিয়া গোপন।

যথনি দেখেছি আজ তথনি পুলকে
নির্ধি ভ্বনময় সাধারে আলোকে
জলে সে ইক্সিড; শাধে শাধে ফুলে ফুলে
ফুটে সে ইক্সিড; সমুদ্রের কূলে কুলে
ধরিত্রীর তটে তটে চিহ্ন সাকি ধায়
ফেনাক্সিড তরক্সের চূড়ায়
ফ্রেড সে ইক্সিড; শুল্লীধ তিমাদ্রির
শৃক্সে শৃক্সে উধ্বিমুখে জাগি বহে শুরে
শুরে শৃক্সে উধ্বিমুখে জাগি বহে শুরে

ভিশন ভোমান পানে বিমুখ হইয়া ছিমু কী লয়ে কে জানে।

> বিপরীত মুখে তারে পড়েছিল, তাই বিশক্ষোড়া সে লিপির অর্থ বৃদ্ধি নাই।

তব পূজা না আনিলে দণ্ড দিবে তারে, যমদূত লয়ে যাবে নরকের দ্বারে, ভক্তিহীনে এই বলি যে দেখায় ভয় তোমার নিন্দুক সে যে, ভক্ত কভু নয়।

হে বিশ্বভ্বনরাজ, এ বিশ্বভ্বনে
আপনারে সব চেয়ে রেখেছ গোপনে
আপন মহিমা-মাঝে। তোমার সৃষ্টির
কুদ্র বালুকণাটুকু, ক্ষণিক শিশির,
তারাও তোমার চেয়ে প্রত্যক্ষ আকারে
দিকে দিকে ঘোষণা করিছে আপনারে।

যা-কিছু তোমারি তাই আপনার বলি চিরদিন এ সংসার চলিয়াছে ছলি— তবু সে চোরের চৌর্য পড়ে না তো ধরা।

व्यापनारत कानाइरिं नाई उव बता।

সেই ভো প্রেমের গর্ব, ভক্তির গৌরব। সে তব অগমক্তক অনম্ব নীরব নিস্তক নির্জন-মাধ্যে যায় অভিসারে পূজার স্থবর্ণথালি ভরি উপহারে।

> তুমি চাও নাই পূজা, সে চাতে পূজিতে; একটি প্রদীপ হাতে রহে সে ধু জিতে অন্তরের অন্তরালে। দেখে সে চাহিয়া, একাকী বসিয়া আছ ভরি ভার হিয়া।

চমিক নিবায়ে দীপ দেখে দে তখন, ভোমারে ধরিতে নারে অনস্থ গগন। চিরজীবনের পূজা চরণের তলে সমর্পণ করি দেয় নয়নের জলে।

> विना ञारमत्मत्र शृक्षा, एक शांभनात्री, विना ञास्वारनत्र श्रीष्ट्र, त्मरे गर्न जाति।

कड-न। इनानभूक आफ सुन् इस्स अक्ष्यां विभाषित सुन्त आलास भागां भागां भागां ने भागां

প্রভাতের বৌদকরে
যে গ্যার বয়ে যায়, নদা জয়ে করে,
বজ টুটি ছুটি চলে-- কে সিদ্ধ মহান,
সেও গো শানে নি কছ ভোমার সাহ্বান।
সে স্থূর গঙ্গোত্রীর শিখরচূছায়
গোমার গণ্ডীর গান কে শুনিতে পায়।

আপন প্রোভেব বেগে কী গভীব টানে গোমাবে সে খুঁজে পায় সেই ভাহা জানে।

मले भाग भिन्छा भाग भाग भाग निर्मात । अध्यान भाग भाग भाग । अध्यान भाग भाग । अध्यान । अध्यान

करित आप्यान भारत या न तथा तर्हें निका छात्न - इंड अपन नामा अने अपने कुरा प्राच्च भारत अपने असे आपेशार्थना य ভिक्त हामार नरा देश्य नाशि मारन,
गृहार्ड निञ्नल हा नड़ा ने डिशानि ভाবে भाष्म उड़ा ग्रे, मिटे छानहा ता डिश् भाष्म डेळ्ळ लाकन डिल्म मधाता नाशि छाहि, नाथ।

দাও ভক্তি শান্তিবস,
সিথা স্থা পূৰ্ণ কবি মঙ্গলকলস
সংসাবভবনদাবে। যে ভক্তি-অমৃত
সমস্ত জীবনে মোৰ হইবে বিস্তৃত
নিগৃত গভীৰ, সৰ্ব কৰ্মে দিবে বল,
বাৰ্থ শুভ চেষ্টাবেও কৰিবে সফল
আনন্দে কলাগে। সৰ প্রেমে দিবে ভৃপ্তি,
সৰ্ব তৃংথে দিবে কেম, স্ব স্থাথে দাপ্তি
দাহহীন।

সম্বিয়া ভাব-সঞ্নীৰ চিত্ত ববে প্ৰিপূৰ্ণ অমত্ত গন্থীব। माइक्ष्मक्तिश्वां ख्यामीवरम लाम किंदि कारम मिछ यामरम यानम— ट्यामि दिख्ता कर्ष जार्यस्थां मि देकरमार्व कर्षा लाम , राष्ट्रार्याक वां मि श्रम ह लामम खर्ब , श्रक ७ व वृत्क लाममान ० जिस मिछमम अर्थ किंगु छ्रा , श्राज्य मिछमम अर्थ मामा लार्य यामि निष्य मामार्थ मन् लुष्लशरक-माथा।

> আজি সেই ভারাবেশ সেই বিহরল হা যদি হয়ে থাকে শেষ, প্রকৃতির স্পর্শমান্ত গিয়ে থাকে দুবে — কোনো তথে নাহি। পল্লী হতে বাজপুরে ত্রার তনেত মাবে, দাও চিতে বল— দেখাও সত্যের মৃতি কঠিন নির্মণ।

আঘাতসংঘাত-মাঝে দাঁড়াইয়ু আসি।
অঙ্গল ক্টা অলংকারবাশি
থূলিয়া কেলেছি দূরে। দাও হস্তে তুলি
নিজহাতে তোমার অমাঘ শরগুলি,
গোমার অক্ষয় তুণ। অস্ত্রে দীক্ষা দেহো,
নণগুক। তোমাব প্রবল পিতৃম্মেহ
ধ্বনিয়া উঠুক আজি কঠিন আদেশে।

কৰো মোরে সম্মানিত নব বীববেশে, তক্ত কর্তবাভারে, ত্রুসত কঠোব বেদনায়। পরাইয়া দাও অঙ্গে মোর ফত্চিত্র-অলংকাব। ধন্য কবো দাসে সফল চেষ্টায় আব নিফল প্রয়াসে। ভাবেব ললিত ক্রোড়ে না রাখি নিলীন কর্মফেত্রে করি দাও সক্ষম স্বাধীন। এ তুর্ভাগা দেশ হতে হে মঙ্গলময়,
দূব করে দাও তুমি দব তুক্ত ভয়—
লোকভয়, রাজভয়, মৃত্যুভয় আব।
দীনপ্রাণ ত্বলেব এ পাষাণাভাব,
এই চিরপেষণ্যমুণা, দুলিওলে
এই নিভা অবমতি, দণ্ডে পলে পলে
এই আত্ম-অবমান, অন্তবে বাহিবে
এই দাসাহেব বজা, এন্ত নঙ্লিবে
সহত্রেব পদপ্রান্তভলে বাব্যাব

এ বৃহৎ লজাবালি চবণ-আঘাতে
চূর্ণ করি দূব করো। মঙ্গলপ্রভাবে
মস্তক তুলিতে দাও অন্য অকালে,
উদাব আলোক-মাঝে, উন্তুল বাহাসে।

অধাকার গতে পাকে অধা স্বীম্প—
আপনার ললাটের রতনপ্রদীপ
নাছি জানে, নাছি জানে স্থালোকলোন।
তেমনি আধারে আছে এই অধা দেশ
তে দওবিধাতা বাজা— যে দীপ্ত রতন
পরায়ে দিয়েছ ভালে গ্রাব যতন
নাছি জানে, নাছি জানে গ্রামার আলোক।

নিতা বহে আপনাব অন্তিবেব শোক, জনমেব গ্লানি। তব আদর্শ মহান আপনাব পরিমাপে কবি খান খান বেখেছে ধলিতে। প্রাকৃ, হেবিতে ভোমায় ভূপিতে হয় না মাথা উপ্ল-িপানে হায়।

> या अक डनी लक लाएकन निस्त या अध कित धारत खित्र मान्त ?

তোমাবে শতধা কবি কৃত্র কবি দিয়া মাটিতে লুটায় যাবা ৩৩-মুগু-হিয়া, সমস্ত ধবলা আজি অবজেলাভবে পা রেখেছে তাহাদের মাধাব টুপবে।

> মনুষ্য হুচ্ছ করি যাবা সাবাবেলা ভোমাবে লইয়া শুধু কবে পুজাবেলা মুক্ষ ভাবভোগে, সেই রক্ষ শিশুদল সমস্ত বিশ্বের আজি থেলার পুরল। ভোমাবে আপন-সাপে করিয়া সমান যে থব বামনগণ করে অবমান কে ভাদের দিবে মান। নিজ মধ্বেরে ভোমারেই প্রাণ দিতে যাবা স্পর্ধা করে কে ভাদের দিবে প্রাণ। ভোমাবেও যারা ভাগ করে কে ভাদের দিবে গ্রন্থারা।

হে রাক্তেন্দ্র, ভোমা-কাছে নত হতে গেলে
যে উদ্বে উঠিতে হয় সেথা বাছ মেলে
লহো ভাকি স্বছর্গম বন্ধুর কঠিন
লৈলপথে— অগ্রসর করো প্রভিদিন,
যে মহান পথে তব বরপুত্রগণ
গিয়াছেন পদে পদে করিয়া অর্জন
মরণ-অধিক ত্বংধ।

ওগো অস্তর্যামী,
অন্তরে যে রহিয়াছে অনির্বাণ আমি
ছংখে তার লব আর দিব পরিচয়।
তারে যেন মান নাহি করে কোনো ভয়,
তারে যেন কোনো লোভ না করে চঞ্চল।
দে যেন জ্ঞানের পথে রহে সমুজ্জ্জ্ল,
জীবনের কর্মে যেন করে জ্যোতি দান,
মৃত্যুর বিশ্রাম যেন করে মহীয়ান।

ত্র্গম পথের প্রান্তে পাছশালা-'পরে
যাহারা পড়িয়া ছিল ভাবাবেশভরে
রসপানে হতজ্ঞান, যাহারা নিয়ত
রাখে নাই আপনারে উন্তত জাগ্রত—
মৃদ্ধ মৃঢ় জানে নাই, বিশ্বযাত্রীদলে
কখন চলিয়া গেছে সুদ্র অচলে
বাজায়ে বিজয়শন্ধ। শুধু দীর্ঘ বেলা
তোমারে খেলনা করি করিয়াছে খেলা—

কর্মেরে করেছে পস্থ নিরপ আচারে, জ্ঞানেরে করেছে হত শাস্ত্রকারাগারে, আপন কক্ষের মাঝে বৃহং ভ্বন করেছে সংকীর্ণ কৃধি দ্বারবাভায়ন— তারা আজ কাঁদিতেছে। আসিয়াছে নিশা— কোপা যাত্রী, কোপা পপ, কোপায় রে দিশা। তুমি সর্বাপ্রয়, এ কি শুধু শৃত্যকথা ? ভয় শুধু তোমা-'পরে বিশাসহীনতা হে রাজন্।

> लाक छय़ ? त्कन लाक छय, लाक भाव । চित्र पियम्त्र भित्र प्रय कान् लाक-मार्थ ?

রাজভয় কার তরে হে রাজেন্দ্র। তুমি যার বিরাজ অন্তরে লভে সে কারার মাঝে ত্রিভ্বনময় তব ক্রোড়, স্বাধীন সে বন্দীশালে।

মৃত্যুভয়
কী লাগিয়া হে অমৃত। হু দিনের প্রাণ
লুপু হলে তথনি কি ফুরাইবে দান—
এত প্রাণদৈশ্য প্রভু, ভাণ্ডারেতে তব ?
সেই অবিশ্বাদে প্রাণ আঁকড়িয়া রব ?

কোপা লোক, কোপা রাজা, কোপা ভয় কার। তুমি নিভ্য আছ, আমি নিভ্য সে ভোমার। আমারে সঞ্জন করি যে মহাসমান
দিয়েছ আপন হল্ডে, রহিতে পরান
ভার অপমান যেন সহা নাহি করি।
যে আলোক আলায়েছ, দিবসশবরী
ভার উপ্রশিখা যেন সব-উচ্চে রাখি,
অনাদর হতে ভারে প্রাণ দিয়া ঢাকি।
মোর মহায়ার সে যে ভোমারি প্রতিমা,
আত্মার মহতে মম ভোমারি মতিমা,
মহেশ্বর।

•

সেধায় যে পদকেপ করে,
অবমান বহি আনে অবভার ভরে,
ভাক-না সে মহাবাজ বিশ্বমহাতলে
ভাবে যেন দও দিই দেবস্থাহা ব'লে
সকাজি লয়ে মোর। যাক আর সব,
আপন গৌরবে রাখি ভোমার গৌরব।

তুমি মোরে অর্পিয়াছ যত অধিকার ফুগ্ন না করিয়া কভু কণামাত্র তার সম্পূর্ণ সঁপিয়া দিব তোমার চরণে অকুন্নিত রাখি তাবে বিপদে মবণে। জীবন সার্থক হবে তবে।

চিরদিন
জ্ঞান যেন থাকে মৃক্ত শৃঙ্খলবিহীন।
ভক্তি যেন ভয়ে নাহি হয় পদানত
পৃথিবীর কাবো কাছে। শুভ চেঠা যত
কোনো বাধা নাহি মানে কোনো শক্তি হতে।
আত্মা থেন দিবাবাত্রি অবাবিত স্রোতে
সকল উল্লম লয়ে ধায় তোমা-পানে
সর্ব বন্ধ টুটি। সদা লেখা থাকে প্রাণে,
'তুমি যা দিয়েছ মোবে অধিকাবভাব
ভাহা কেড়ে নিতে দিলে অমান্য তোমাব।'

আগদে লাজে নতলিবে নিতা নিববধি

অপমান অবিচাৰ সহা কৰে যাদ

তবে সেই দীন প্ৰাণে তব সংগ হায

দাও দাও মান হয়। তবল আগ্রায

তোমাৰে ধবিতে নাবে দুচ্নিদাভাব।

ফীলপ্রাণ তোমাৰেও ক্ষুত্রীণ বাব

আপনাৰ মতে।— যত আদেশ তোমাৰ
পতে পাকে, আবেশে দিবস কাডে গাব।

প্র পুরু মিলা। আসি গ্রাস করে গাবে

চুলিকে , মিলা। মুগে, মিলা। বাবহাবে,

মিলা। চিতে, মিলা। তাৰ মন্তক মাডামে —

না পাবে ভাভাতে ভাবে ইনিয়া দাভায়ে।

ভাপমানে-নত্তিব ভাষে-ভাত জন মিপাবে ভাতিমা দেয় ত্ব সিতাসন। হে সকল ঈশ্বরের পরম ঈশ্বর, তপোবনতরুচ্ছায়ে মেঘমন্দ্রর ঘোষণা করিয়াছিল সবার উপরে অগ্নিতে, জলেতে, এই বিশ্বচরাচরে, বনস্পতি-ওষ্ণিতে এক দেবতার অথণ্ড অক্ষয় এক্য। সে বাক্য উদার এই ভারতেরি।

যাঁরা সবল স্বাধীন
নির্ভয় সরলপ্রাণ, বন্ধনবিহীন,
সদর্পে ফিবিয়াছেন বীর্যজ্যোতিমান
লাজ্বিয়া সরণ্য নদী পর্বত পাষাণ
তাঁবা এক মহান বিপুল সত্যপথে
তোমাবে লভিয়াছেন নিখিল জগতে।
কোনোখানে না মানিয়া সাত্রার নিষেধ
সবলে সমস্ত বিশ্ব করেছেন ভেদ।

তিহার। দেখিয়াছেন— বিশ্বচরাচর
কবিছে আনন্দ হতে আনন্দনিধার।
আয়ির প্রত্যেক শিখা ভাগে এর কাঁপে,
বারুর প্রত্যেক শ্বাস ভোগারি প্রত্যেপ,
ভোগারি আন্দেশ রহি মাতুর নিরারণ
চরাচর মন্বিয়া করে যাওাগাও।
গিরি উটিয়াছে উকের তামারি ইপিতে,
নালী ধায় নিকে নিকে তামারি সাগাতে।
শ্রো শ্রো চপ্রতা গ্রহতারা যত
আনন্ত প্রাণের মারে কাঁপিছে নিয়ত।

ভাঁছবা ছিলেন নিতা এ বিশ-আগ্য কেবল ভোমাবি ভিয়ে, প্ৰথাবি নিদ্যা, ভোমাবি শাসনগ্ৰ দীপত্পমুখ বিশ্বত্ৰখনেৰ চেফুৱ সংখ্যা আমরা কোথায় আছি, কোথায় স্থদ্রে দীপহীন জীর্ণভিত্তি অবসাদপুরে ভগ্নগৃহে, সহম্রের ক্রকৃটির নীচে কুজপৃষ্ঠে নতশিরে; সহস্রের পিছে চলিয়াছি প্রভূষের তর্জনীসংকতে কটাক্ষে কাঁপিয়া; লইয়াছি শির পেতে সহস্রশাসনশাস্ত্র।

সংকৃচিতকায়া
কাঁপিতেছে রচি নিজ কল্পনার ছায়া।
সন্ধ্যার আঁধারে বসি নিরানন্দ ঘরে
দীন-আত্মা মরিতেছে শত লক্ষ ডরে।
পদে পদে ত্রস্তচিত্তে হয়ে লুঠ্যমান
ধ্লিতলে, তোমারে যে করি অপ্রমাণ।
যেন মোরা পিতৃহারা ধাই পথে পথে
অনীশ্বর অরাজক ভয়ার্ড জগতে।

একদা এ ভারতের কোন্ বনতলে
কৈ তৃমি মহানপ্রাণ, কী আনন্দবলে
উচ্চারি উঠিলে উচ্চে, 'লোনো বিশ্বজন,
লোনো অমৃতের পুত্র যত দেবগণ
দিব্যধামবাসী, আমি জেনেছি তাঁহারে
মহান্ত পুরুষ যিনি আধারের পারে
জ্যোতির্ময়। তাঁরে জেনে, তাঁর পানে চাহি
মৃত্যুরে লভিবতে পার, অল্প পথ নাহি।'

আরবার এ ভারতে কে দিবে গো আনি সে মহা-আনন্দমন্ত্র, সে উদাত্তবাণী সঞ্জীবনী, স্বর্গে মর্ভে সেই মৃত্যুঞ্জয় পরম ঘোষণা, সেই একান্ত নিভ্য় অনস্ত অমৃতবার্তা।

> রে মৃত ভারত, শুধু সেই এক আছে, নাহি অসু পথ।

এ মৃত্যু ছেদিতে হবে, এই ভয়জাল, এই পুঞ্গপুঞ্জীভূত জড়ের জঞ্জাল, মৃত আবর্জনা। ওরে জাগিতেই হবে এ দীপ্ত প্রভাতকালে, এ জাগ্রত ভবে, এই কর্মধামে। ছুই নেত্র করি আঁধা জ্ঞানে বাধা, কর্মে বাধা, গতিপথে বাধা, আচারে বিচারে বাধা করি দিয়া দূর ধরিতে হইবে মৃক্ত বিহঙ্গের স্থুর আনন্দে উদার উচ্চ।

> সমস্ত তিমির ভেদ করি দেখিতে হইবে উপ্ত শির এক পূর্ণ জ্যোতির্ময়ে অনস্ত ভুবনে। ঘোষণা করিতে হবে অসংশয় মনে, 'ওগো দিব্যধামবাসী দেবগণ যত, মোরা অমৃতের পুত্র তোমাদের মতো।'

তব চরণের আশা ওগো মহারাজ, ছাড়ি নাই। এত যে হীনতা, এত লাজ, তব্ ছাড়ি নাই আশা। তোমার বিধান কোমনে কী ইম্জাল করে যে নির্মাণ সংগোপনে সবার নয়ন-অহারালে, কেহ নাহি জানে। তোমার নির্দিষ্ট কালে মৃহতেই অসহাব আসে কোপা হতে আপনারে বাজ কবি আপন আলোতে চিরপ্রতীক্ষিত চির-সহ্যবের বেশে।

আছ তুমি অন্তর্গানী, এ লজ্জিভ দেলে;
সবাব অজ্ঞাভসারে ক্রদ্যে ক্রদ্যে
গ্রুত গ্রুত রাত্রিদিন জাগকক হয়ে
ভোমার নিগৃত শক্তি কবিভেতে কাজ।
আমি ভাজি নাই আশা ভগো মহারাজ।

পতিত ভারতে তুমি কোন্ জাগরণে জাগাইবে হে মহেশ, কোন্ মহাক্রণে, সে মোর কল্পনাতীত। কী তাহার কাজ, কী তাহার শক্তি দেব, কী তাহার সাজ, কোন্ পথ তার পথ, কোন্ মহিমায় দাঁড়াবে সে সম্পদের শিখরসীমায় তোমার মহিমজ্যোতি করিতে প্রকাশ নবীন প্রভাতে।

আজি নিশার আকাশ যে আদর্শে রচিয়াছে আলোকের মালা, সাজায়েছে আপনাব অন্ধকার থালা, ধরিয়াছে ধরিত্রীর মাথাব উপব, সে আদর্শ প্রভাতেব নহে, মহেশ্বব। জাগিয়া উঠিবে প্রাচী যে অকণালোকে সে কিরণ নাই আজি নিশীথের চোখে। শতাব্দীর সূর্য আজি বক্তমেঘ-মাঝে অস্ত গেল; হিংসাব উংসবে আজি বাজে অস্ত্রে মবণের উন্মান রাগিনা ভয়ংকরা। দয়াহান সভা গ্রানাগিনা তুলেছে কৃটিল ফণা চক্ষের নিমিষে গুপ্ত বিষদস্থ ভাব ভবি ভার বিষে।

স্থাপে সোপে বেধেছে সংঘাত; লোভে লোভে ঘটেছে সংগ্রাম , প্রশ্যমন্ত্রমানে ভাগি ভ্রমবানী বর্বতা উমিয়াছে ভাগি প্রশ্যা হতে। লাজা শব্ম তেয়াগি জাতিপ্রেম নাম ধরি প্রচণ্ড অহ্যায় ধর্মেবে ভাসাতে চাতে বলের বহ্যায়। করিদল চাংকাবিছে জাগাইয়া ভীতি শ্রশান-কৃত্বদেব কাডাকাভি-গাতি।

স্বার্থের সমাপ্তি অপঘাতে। অকস্মাৎ পরিপূর্ণ ফীতি-মাঝে দারুণ আঘাত বিদীর্ণ বিকীর্ণ করি চূর্ণ করে তারে কালঝঞ্জা-ঝংকারিত তুর্যোগ-আঁধারে। একের স্পর্ধারে কভু নাহি দেয় স্থান দীর্ঘকাল নিখিলের বিরাট বিধান।

> স্বার্থ যত পূর্ণ হয় লোভক্ষুধানল তত তার বেড়ে ওঠে— বিশ্বধরাতল আপনার খান্ত বলি না করি বিচার জঠরে পুরিতে চায়। বীভংস আহার বীভংস ক্ষারে করে নির্দয় নিলাজ, তথন গজিয়া নামে তব রুদ্র বাজ।

> > ছুটিয়াছে জাতিপ্রেম মৃত্যুর সন্ধানে বাহি স্বার্থতরী, গুপু পর্বতের পানে।

এই পশ্চিমের কোণে রক্তরাগরেখা
নহে কভু সৌমারশ্মি অরুণের লেখা
তব নব প্রভাতের। এ শুধু দারুণ
সন্ধ্যার প্রলয়দীপ্তি। চিতার আগুন
পশ্চিমসমুদ্রতটে করিছে উদ্গার
বিক্লাঙ্গল সার্থদীপ্ত লুক সভাতার
মশাল হইতে লয়ে শেষ অগ্নিকণা।

এই শুলানের মাঝে শক্তির সাধনা তব আরাধনা নহে হে বিশ্বপালক। তোমার নিখিলপানী আনন্দ-আলোক হয়তো লুকায়ে আছে পূর্বসিক্ষুতীরে বহু ধৈর্যে নম্র স্তব্দ হঃথের ভিনিরে সর্বরিক্ত অঞ্চসিক্ত দৈক্তের দীকায় দীর্যকাল— ত্রাহ্মসূত্র্বের প্রভীকায়। সে পরম পবিপূর্ণ প্রভাতের লাগি হে ভাবত, সর্বজ্থে বহ তুমি জাগি সবলনির্মলচিত্ত; সকল বন্ধনে আগ্রাবে স্বাধীন বাখি— পুপা ও চন্দনে আপনার অন্তরের মাহাম্মান্দির সজ্জিত স্থানি কবি জ্থেনম্রনির ভাবে পদতলে নিতা রাখিয়া নীব্বে।

> তাঁ হতে বঞ্চিত কৰে তোমাৰে এ ভবে এমন কেহই নাই— সেই গৰ্নভবে স্বভয়ে থাকো তুমি নিৰ্ভয়-সন্তবে ভাব হস্ত হতে লয়ে অফ্য় সম্মান। ধ্বায় হোক-না তব যত নিম্ন স্থান ভাব পাদপীঠ কৰো সে আসন তব যাঁব পাদবেণুকণা এ নিখিল ভব।

সে উদাব প্রত্যাধন প্রথম অকণ যথনি মেলিবে নেত্র— প্রশাস্থ ককণ— শুপ্রশিব অপ্রভেদী উদয়নিথানে হে তুঃখা জাগ্রহ দেশ, ১০ বছদার প্রথম স্থাত তার যেন উচ্চ বর্ণিয়, প্রথম ঘোষণাধ্বনি।

> कृषि ,श्रावः भागिः, हिन्हि सिन डेर्ध्व कृष्टि गार्डर्श नग्नेन, 'द्रामः सार्थ, तिस्र हान नन् स्माधिका, विसाहित शिकार्धिन न कृषेश्रिम्श कृष्टि । हन निकाल भर्थाय निवास्त्रिक्तिक-स्वाति न द्राप्टर्गिशः। हन रेस्स रेप्नेनास, नम्भा ,ग्राप्त समुक्त सुकुष्ट्राय, ग्रांति श्राद्यातः।

তাঁরি হস্ত হতে নিয়ো তব ছংখতার হে ছংখী, হে দীনহান। দীনতা তোমার ধরিবে ঐশ্বর্যদীপ্তি যদি নত রহে তাঁরি দ্বারে। আর কেহ নহে নহে নহে— তিনি ছাড়া আর কেহ নাই ত্রিসংসারে যার কাছে তব শির লুটাইতে পারে।

পিতৃরপে রয়েছেন তিনি, পিতৃ-মাঝে
নমি তাঁরে। তাঁহারি দক্ষিণ হস্ত রাজে
স্থায়দণ্ড-'পরে, নতশিরে লই তুলি
তাহার শাসন; তাঁরি চরণ-অঙ্গুলি
আছে মহবের 'পরে, মহতের দ্বারে
আপনারে নম্র ক'রে পূজা করি তাঁরে।
তাঁরি হস্তম্পর্শরূপে করি অন্তুত্ব
মস্তকে তুলিয়া লই হৃঃথের গৌরব।

তোমার জায়ের দও প্রত্যেকের করে
অর্পণ করেছ নিজে। প্রত্যেকের 'পরে
দিয়েছ শাসনভার হে রাজাধিরাজ।
সে গুরু সমান তব, সে গুরুহ কাজ,
নমিয়া ভোমারে যেন শিরোধার্য করি
সবিনয়ে। তব কার্যে যেন নাহি ভরি
কভু কারে।

ক্ষমা যেথা ক্ষীণ ত্র্বলভা হে ক্ষম, নির্চুর যেন হতে পারি ভথা ভোমার আদেশে। যেন রসনার মম সভ্যবাক্য কলি উঠে পরস্কাসম ভোমার ইঙ্গিভে। যেন রাখি ভব মান ভোমার বিচারাসনে লয়ে নিজ স্থান। অক্যার যে করে আর অক্যায় যে সহে ভব খুণা যেন ভারে তৃণসম দহে। ওরে মৌনস্ক, কেন আছিস নীববে অন্তর কবিয়া রুদ্ধ। এ মুখব ভবে ভোর কোনো কথা নাই, বে আনন্দহীন ? কোনো সভ্য পড়ে নাই চোখে ? ওরে দীন, কঠে নাই কোনো সংগীতের নব ভান ?

> ভোর গৃহপ্রান্ত চুন্ধি সমুদ্র মহান গাহিছে অনন্ত গাথা— পশ্চিমে পুববে। কত নদী নিববধি ধায় কলরবে তবল সংগীতধারা হয়ে মূর্তিমতী। শুণ কুমি দেখ নাই সে প্রত্যক্ষ জ্যোতি যাহা সতো, যাহা গীতে, আনন্দে আশায় ফুটে উঠে নব নব বিচিত্র ভাষায়। তব সতা, তব গান, কদ্ধ হয়ে রাজে রাত্রিদিন জীর্ণ শাস্ত্রে শুক্পত্র-মাঝে।

िछ (यथा ভ्यन्य, डेफ एथा नित.

छान (यथा मृक, यथा गृक्त প्राधित

णालन श्राक्त हाल नितमनत्ता

तस्रात्त ताल नार्वे ४६ सृष्ट कृति,

(यथा वाका सन्यात हेस्मम्थ इ.९

हेक्कृमिया हेल, यथा निताति हे स्थार निताति ।

(मान (नान निता निता निताति ।

प्राप्त सक्या महस्रति ।

प्राप्त सम्याति ।

प्त सम्याति ।

प्राप्त सम्याति ।

प्त सम्याति ।

(मधा कुछ चां 5 रतन सनना ना नि निहारतन सां 5 अप रमाल ना है शिसि, (भोकरमान करन नि सन्दा निना संधा कुम भन कर्म हिमा चां नरनन (ने डा न

> निछ छाष निर्नेष आधा । करि लिए। भारत्रहरू अछ यहाँ कर्या छ। श्रिक।

আমি ভালোবাসি দেব, এই বাঙ্গালার
দিগন্তপ্রসার ক্ষেত্রে যে শান্তি উদার
বিবাজ করিছে নিত্য— মুক্ত নীলাম্বরে
অচ্ছায় আলোক গাহে বৈরাগ্যের স্বরে
যে ভৈরবীগান, যে মাধুরী একাকিনী
নদীর নির্জন তটে বাজায় কিংকিনী
তবল কল্লোলরোলে, যে সরল স্নেহ
তকচ্ছায়া-সাথে মিশি স্নিগ্নস্লীগেহ
অঞ্চলে আবরি আছে, যে মোর ভবন
আকাশে বাতাসে আর আলোকে মগন
সন্তোষে কল্যাণে প্রেমে—

করো আশীর্বাদ, যথনি তোমার দৃত আনিবে সংবাদ তথনি তোমার কার্যে আনন্দিত মনে সব ছাড়ি যেতে পারি তুঃথে ও মবণে। এ নদীব কলধ্বনি যেপায় বাজে না
মাতৃকলকন্ত্রসম, যেপায় সাজে না
কোমলা উবরা ভূমি নব-নবোংসবে
নবীনববন বজে যৌবনগৌবরে
বসতে শবতে বরষায়, কজাকাল
দিবসবাত্রিবে যেপা করে না প্রকাশ
পূর্ণপ্রজ্বিকপে, যেপা মাঙ্ডায়া
কিন্তু-অন্তর্গুরে নাজি করে যাও্যা-আসা
কলাণী ক্রম্মলন্ত্রী, যথা নিশিদিন
কল্পনা ফিরিয়া আসে পরিচ্যুত্রীন
পরগুজ্বাব হতে প্রেব মাঝারে—

(मशानि गांडे गमि, सन रगन भारत महाछ होनिया निष्ट अवहोंने .थाएड उन महानक्षाता भने गेंडे हर्ड। আমার সকল অঙ্গে তোমার পরশ লগ্ন হয়ে রহিয়াছে রজনীদিবস প্রাণেশ্বর, এই কথা নিত্য মনে আনি রাথিব পবিত্র করি মোর তমুখানি। মনে তুমি বিরাজিছ হে পরমজ্ঞান, এই কথা সদা স্মরি মোর সর্বধ্যান সর্বচিন্তা হতে আমি সর্বচেষ্টা করি সর্বমিথ্যা রাখি দিব দূরে পরিহরি।

হাদয়ে রয়েছে তব অচল আসন
এই কথা মনে রেখে করিব শাসন
সকল কৃটিল দেষ, সর্ব অমঙ্গল—
প্রেমেরে রাখিব করি প্রস্কৃট নির্মল।
সর্ব কর্মে তব শক্তি এই জেনে সার
করিব সকল কর্মে তোমারে প্রচার।

অচিন্তা এ ব্রহ্মাণ্ডের লোক-লোকান্তরে অনন্ত শাসন থাবে চিরকাল এবে প্রত্যক্ত প্রকাশ, প্রত্যক অণুব মাঝে হতেছে প্রকাশ, থুগে যুগে মানবের মহা-ইঙিহাস বহিয়া চলেছে সদা ধরণীর 'পব থাব ভর্জনীর ছায়া, সেই মহেশব আমার চৈত্ত্য-মাঝে প্রভাকে পলকে কবিছেন অধিদান— ভাহারি আলোকে চক্ষু মোর দৃষ্টিদীপ্ত, ভাহাবি পরশে অক্স মোর দৃষ্টিদীপ্ত, ভাহাবি পরশে অক্স মোর দ্বিদীপ্ত, ভাহাবি পরশে

যোগা চলি, যোগা রহি, যোগা বাস করি, প্রেট্যক নিশাসে মার এই কথা শ্রি— আপন মন্তক-পরে স্বদা স্ক্রণা বহিব ভাঁহার গ্রহ, নিজেব ন্যুগা। না গণি মনের ক্ষতি ধনের ক্ষতিতে হে বরেণ্য, এই বর দেহো মোর চিতে। যে ঐশর্যে পরিপূর্ণ তোমার ভ্বন এই তৃণভূমি হতে স্থানুর গগন— যে আলোকে, যে সংগীতে, যে সৌন্দর্যধনে, তার মূল্য নিত্য যেন থাকে মোর মনে স্বাধীন সবল শাস্ত সরল সস্তোষ।

অদৃষ্টেরে কভূ যেন নাহি দিই দোষ।
কোনো হু:খ কোনো ক্ষতি-অভাবের তরে
বিস্বাদ না জ্বমে যেন িন্টার্কাটনে
ক্ষুত্তথণ্ড হারাইয়া। ধনীর সমাজে
না হয় না হোক স্থান, জগতের মাঝে
আমার আসন যেন রহে সর্ব ঠাই,
হে দেব, একাস্তিচিত্তে এই বর চাই।

এ কথা শ্বরণে রাখা কেন গো কঠিন, তুমি আছ সব চেয়ে, আছ নিশিদিন, আছ প্রতি ক্ষণে— আছ দূরে, আছ কাছে, যাহা-কিছু আছে তুমি আছ ব'লে আছে।

ষেধনি প্রবেশ আমি করি লোকালরে,

যথনি মানুষ আসে স্কৃতিনিন্দা লয়ে—

লয়ে রাগ, লয়ে ছেষ, লয়ে গর্ব তার—

অমনি সংসার ধরে পর্বত-আকার

আবরিয়া উপ্বলোক; তরজিয়া উঠে

লাজভয় লোভকোভ। নরের মুকুটে

যে হীরক অলে তারি আলোকবলকে

অন্ত আলো নাহি হেরি হ্যালোকে ভূলোকে।

মানুষ সম্পুধে এলে কেন সেই ক্ষণে

তোমার সমুধে আছি নাহি পড়ে মনে।

তোমারে বলেছে যারা, পুত্র হতে প্রিয়, বিস্ত হতে প্রিয়তর, যা-কিছু আত্মীয় সব হতে প্রিয়তম নিধিল ভ্বনে, আত্মার অস্তরতর— তাঁদের চরণে পাতিয়া রাধিতে চাহি হৃদয় আমার।

> সে সরল শাস্ত প্রেম গভীর উদার— সে নিশ্চিত নিঃসংশয়, সেই স্থানিবিড় সহজ মিলনাবেগ, সেই চিরস্থির আত্মার একাগ্র লক্ষ্য, সেই সর্ব কাজে সহজেই সঞ্চরণ সদা তোমা-মাঝে গন্ধীর প্রশাস্ত চিত্তে, হে অন্তর্যামী, কেমনে করিব লাভ। পদে পদে আমি প্রেমের প্রবাহ তব সহজ বিশ্বাসে। অস্তরে টানিয়া লব নিশ্বাসে নিশ্বাসে।

হে অনস্ত, ষেপা ভূমি ধারণা-অতীত সেপা হতে আনন্দের অব্যক্ত সংগীত করিয়া পড়িছে নামি— অদৃশ্র অগম হিমাজিশিধর হতে জাহ্নবীর সম।

সে ধ্যানাত্রভেদী শৃঙ্গ যেথা স্বর্ণলেখা জগতের প্রাভঃকালে দিয়েছিল দেখা আদি অন্ধকার-মাঝে, যেথা রক্তজ্ববি অস্ত যাবে জগতের প্রাস্ত সন্ধ্যারবি, নব নব ভ্বনের জ্যোতির্বাম্পরাশি পুঞ্জ পুঞ্জ নীহারিকা যার বক্ষে আসি ফিরিছে স্ফলবেগে মেঘখণ্ডসম যুগে-যুগাস্তরে— চিন্তবাভায়ন মম সে অগম্য অচিস্থ্যের পানে রাত্রিদিন রাখিব উন্মুক্ত করি হে অন্তবিহীন।

একাধারে তুমিই আকাশ, তুমি নীড়।
হে স্থলর, নীড়ে তব প্রেম স্থনিবিড়
প্রতি ক্ষণে নানা বর্ণে নানা গন্ধে-গীতে
মুগ্ন প্রাণ বেষ্টন করেছে চারি ভিতে।
সেথা উষা ডান হাতে ধরি স্বর্ণথালা
নিয়ে আসে একখানি মাধুর্যের মালা
নীরবে পরায়ে দিতে ধরার ললাটে;
সন্ধ্যা আসে নম্মুখে ধেমুশ্ন্য মাঠে
চিহ্নহীন পথ দিয়ে লয়ে স্বর্ণধারি
পশ্চিমসমুদ্র হতে ভরি শান্তিবারি।

তুমি যেথা আমাদের আত্মার আকাশ অপার সঞ্চারক্ষেত্র, সেথা শুভ্র ভাস; দিন নাই, রাত্রি নাই, নাই জনপ্রাণী, বর্ণ নাই, গন্ধ নাই— নাই নাই বাণী। তব প্রেমে ধতা তৃমি করেছ আমারে প্রিয়তম, তব্ শুধু মাধুর্য-মাঝারে চাহি না নিমগ্ন করে রাখিতে হৃদয়। আপনি যেথায় ধরা দিলে স্নেহময়, বিচিত্র সৌন্দর্যডোরে, কত স্নেহে প্রেমে, কত রূপে— সেথা আমি রহিব না থেমে তোমার প্রণয়-অভিমানে। চিন্তে মোর জড়ায়ে বাঁধিব নাকো সম্ভোষের ডোর।

> আমার অতীত তুমি যেপা সেইখানে অন্তরাত্মা ধায় নিত্য অনম্ভের টানে সকল বন্ধন-মাঝে— সেপায় উদার অন্তহীন শাস্তি আর মৃক্তির বিস্তার।

> > তোমার মাধ্য যেন বেঁধে নাহি রাখে, তব ঐশর্যের পানে টানে সে আমাকে।

হে দ্র হইতে দ্ব, হে নিকটতম,
যেথায় নিকটে তুমি সেথা তুমি মম;
যেথায় স্থারে তুমি সেথা আমি তব।
কাছে তুমি নানা ভাবে নিত্য নব নব
স্থাে তুংখে জনমে মরণে। তব গান
জলস্থল শৃত্য হতে কবিছে আহ্বান
মোরে সর্ব কর্ম-মান্যে— বাজে গ্রুষরে
প্রের প্রহরে চিত্তক্হরে-কুহরে
তোমাব মঙ্গলমন্ত্র।

যেথা দূর তুমি সেথা আত্মা হাবাইয়া সর্ব তটভূমি তোমার নিঃসীম-মাঝে পূর্ণানন্দভবে আপনারে নিঃশেঘিয়া সমর্পণ কবে। কাছে তুমি কর্মতট আত্মাতটিনীর, দূরে তুমি শান্তিসিন্ধু অনন্ত গভীর। মুক্ত করো, মুক্ত কবো নিন্দাপ্রশংসার
ছেছেল শৃথাল হতে। সে কঠিন ভার
যদি খসে যায় তবে মানুষেব মাঝে
সহজে ফিরিব আমি সংসাবেব কাজে—
ভোমারি আদেশ শুধু জ্বয়ী হবে, নাথ।
ভোমার চরণপ্রান্তে কবি প্রনিপাত
তব দও পুরস্কার অন্তবে গোপনে
লইব নীরবে কুলি—

নিঃশদগমনে
চলে যাব কর্মক্ষেত্র-মাঝখান দিয়া
বহিয়া অসংখা কাজে একনিষ্ঠ হিয়া,
সঁপিয়া অবার্থ গতি সহল্র চেষ্টায়,
এক নিতা ভক্তিবলে, নদা যথা ধায়
লক্ষ লোকাল্য-মাঝে নানা কর্ম সারি
সমুদ্রেব পানে লয়ে বন্ধ হান বারি।

তুর্দিন ঘনায়ে এল ঘন অন্ধকারে হে প্রাণেশ! দিগ্বিদিক রৃষ্টিবারিধারে ভেসে যায়, কুটিল কটাক্ষে হেসে যায় নির্তুর বিত্যংশিখা— উতরোল বায় তুলিল উতলা করি অরণ্যকানন।

আজি তুমি ডাকো অভিসারে হে মোহন,
হে জীবনস্বামী। অশ্রুসক্ত বিশ্ব-মাঝে
কোনো হুংথে, কোনো ভয়ে, কোনো বৃথা কাজে
রহিব না রুদ্ধ হয়ে। এ দীপ আমার
পিচ্ছিল তিমির পথে যেন বারস্বার
নিবে নাহি যায়— যেন আর্দ্র সমীরণে
ভোমার আহ্বান বাজে। হুংখের বেষ্টনে
হুর্দিন রচিল আজি নিবিড় নির্জন;
হোক আজি ভোমা-সাথে একাস্ত মিলন।

দীর্ঘকাল অনাবৃষ্টি, অতি দীর্ঘকাল.
হে ইন্দ্র, হৃদয়ে মম। দিক্চক্রবাল
ভয়ংকর শৃষ্ঠ হেরি, নাই কোনোখানে
সরস সজল রেখা— কেহ নাহি আনে
নববারিবর্ষণের শ্রামল সংবাদ।

যদি ইচ্ছা হয় দেব, আনো বন্ধনাদ প্রলয়মুখর হিংস্র ঝটিকার সাথে। পলে পলে বিহাতের বক্র ক্ষাঘাতে সচকিত করো মোর দিগ্দিগহুর। সংহরো সংহরো প্রভো, নিস্তন্ধ প্রখর এই রুদ্র, এই ব্যাপ্ত, এ নিঃশব্দ দাহ, নিঃসহ নৈরাশ্যভাপ। চাহো নাপ, চাহো জননী যেমন চাহে সক্ষলনয়ানে পিতার ক্রোধের দিনে সন্থানের পানে। আমার এ মানসের কানন কাঙাল
শীর্ণ শুদ্ধ বাস্থ মেলি বহু দীর্ঘকাল
আছে ক্রুদ্ধ উপ্ব-পানে চাহি। ওহে নাথ,
এ কন্দ্র মধ্যাহ্ন-মাঝে কবে অকস্মাং
পথিক পবন কোন্ দূর হতে এসে
ব্যগ্র শাখাপ্রশাখায় চক্ষের নিমেষে
কানে কানে রটাইবে আনন্দমর্মর,
প্রতীক্ষায় পুল্কিয়া বন বনান্থর।

গন্তীর মাতৈঃমন্দ্র কোথা হতে ব'হে ভোমার প্রদাদপুঞ্জ ঘনসমারোহে ফেলিবে আচ্ছন্ন করি নিবিড়চ্ছায়ায়। তার পরে বিপুল বর্ষণ, তাব পরে পরদিন প্রভাতের সৌম্যারবিকরে রিক্ত মালঞ্চের মাঝে পূজাপুষ্পরাশি নাহি জানি কোথা হতে উঠিবে বিকাশি। এ कथा मानिव आमि, এक इटड छूरे
क्मिरन य इटड शास्त्र खानि ना किहूरे।
क्मिरन य किहू इय, क्वर इय क्वर,
किहू थाक कारनाकाल, कारत वरण एड,
कारत वरण आया मन, वृश्विरड ना लिख हिनकाण निविध्व विश्वकारङ्ख निख्य निवाक् हिर्छ।

> বাহিবে যাহার কিছুতে নাবিব যেতে, আদি অথ তাব, অর্থ তাব, তথ্য তাব বৃধিব কেমনে নিমেষের তবে। এই শুদু জানি মনে, সুক্র সে, মহান সে, মহা ভয়ংকব, বিচিত্র সে, অজ্যের সে, মম মনোহর।

> > हेहा उपानि, किछुहै ना जानिया जानाए । निभित्निक हिन्द्रा है भागिष्ठ (हामार्ड)

জীবনের সিংহদ্বারে পশিস্থ যে ক্ষণে এ আশ্চর্য সংসারের মহানিকেতনে সে ক্ষণ অজ্ঞাত মোর। কোন্ শক্তি মোরে ফুটাইল এ বিপুল রহস্তের ক্রোড়ে অর্ধরাত্রে মহারণ্যে মুকুলের মতো।

> তবু তো প্রভাতে শির করিয়া উন্নত যথনি নয়ন মেলি নিরখিমু ধরা কনককিরণ-গাঁথা নীলাম্বর-পরা, নিরখিমু স্থে-ছঃখে-খচিত সংসার, তথনি অজ্ঞাত এই রহস্ত অপার নিমেষেই মনে হল মাতৃবক্ষসম নিতান্তই পরিচিত, একান্তই মম।

> > রূপহীন জ্ঞানাতীত ভীষণ শক্তি ধরেছে আমার কাছে জননীমুরতি।

মৃত্যুও অজ্ঞাত মোর। আজি তার তরে কণে কণে শিহরিয়া কাঁপিতেছি ডরে। সংসারে বিদায় দিতে, আঁখি ছলছলি জীবন আঁকড়ি ধরি আপনার বলি' তুই ভূজে।

> ত্রে মৃত্, জীবন সংসার কে করিয়া রেখেছিল এত আপনার জনমনুকৃতি হতে ভোমার অজ্ঞাতে, ভোমার ইচ্ছার পূবে। মৃত্যুর প্রভাতে সেই অচেনার মৃথ কেরিবি আবার মৃকৃতি চেনার মতো। জীবন আমার এত ভালোবাসি বলে হয়েছে প্রভায়, মৃত্যুবে এমনি ভালো বাসিব নিশ্চয়।

> > खन छ छ दूरल निर्म कैएम निर्म छ छ, , यूर्ड याचाम भाग्र शिर्म खना खुर्न ।

বাসনারে থর্ব করি দাও হে প্রাণেশ।
সে শুধু সংগ্রাম করে লয়ে এক লেশ
বৃহত্রের সাথে। পণ রাথিয়া নিখিল
জিনিয়া নিতে সে চাহে শুধু এক তিল।
বাসনার কৃদ্র রাজ্য করি একাকার
দাও মোরে সম্যোধের মহা অধিকার।

অযাচিত যে সম্পদ অজস্র আকারে উষার আলোক হতে নিশার আধারে জলে সলে রচিয়াছে অনন্ত বিভব— সেই সর্বলভা স্থুখ অগুলা তুর্লভ সব চেয়ে। সে মহা-সহজ স্থুখানি পূর্ণশতদলসম কে দিবে গো আনি জলস্থল-আকাশের মাঝ্যান হতে ভাসাইয়া আপনাবে সহজেব স্রোতে। শক্তিদন্ত স্বাৰ্থলোভ মান্ত্ৰীৰ মতন দেখিতে দেখিতে আজি ঘিবিছে ভ্ৰন। দেশ হতে দেশান্ত্ৰে স্পূৰ্ণবিষ প্ৰান্ত্ৰ শান্তিময় পল্লা যত কৰে ছাবখাৰ। যে প্ৰশান্ত সবলতা আনে সমুদ্দ্দ্ৰন, স্নেহে যাহা বস্পিক, সংখ্যাৰে শীংল, ছিল তাহা ভাৱতের ওপোৰন হলে।

> वश्वानिकोन मन भन करण स्ट्ल প্ৰিনাপ কৰি দিও উদান কলাণ, ভঙ্গে জানে স্বভূতে অনাৱিত ধানে প্ৰিত আগ্নায়কপে। আভি ভোহা নাশি চিত্ত যেথা ভিল স্পা এল দ্বানাশি, ভূপি যেথা ভিল স্পা এল আভ্নন, শান্তি যেথা ভিল সেথা আগ্ৰের সমন।

কোরো না কোরো না লক্ষা হে ভারতবাসী,
শক্তিমদমন্ত ওই বণিক বিলাসী
ধনদৃপ্ত পশ্চিমের কটাক্ষসমূপে
শুভ্র উত্তরীয় পরি শাস্তসৌম্যমূপে
সরল জীবনখানি করিতে বহন।

শুনো না কী বলে তারা; তব শ্রেষ্ঠ ধন থাকুক হাদয়ে তব, থাক্ তাহা ঘরে, থাক্ তাহা স্থাসন্ত্ন ললাটের 'পরে অদৃশ্য মুকুট তব। দেখিতে যা বড়ো, চক্ষে যাহা স্থাকার হইয়াছে জড়ো, তারি কাছে অভিভূত হয়ে বারে বারে ল্টায়ো না আপনায়। স্বাধীন আত্মারে দারিজ্যের সিংহাসনে করো প্রতিষ্ঠিত রিক্ততার অবকাশে পূর্ণ করি চিত। হে ভারত, নূপভিরে শিখায়েছ তুমি
ত্যজিতে মৃকুট দণ্ড সিংহাসন ভূমি,
থরিতে দরিজ্ঞবেশ; শিথায়েছ বীরে
ধর্মযুদ্ধে পদে পদে ক্ষমিতে অরিরে,
ভূলি জয় পরাজয় শর সংহরিতে।
কর্মীরে শিখালে ভূমি যোগযুক্ত চিতে
সর্বফলস্পৃহা ব্রন্ধে দিতে উপহার।
গৃহীরে শিখালে গৃহ করিতে বিস্তার
প্রতিবেশী আত্মবন্ধ্ অতিথি অনাথে।

ভোগেরে বেঁধেছ তুমি সংযমের সাথে,
নির্মল বৈরাগ্যে দৈশ্য করেছ উজ্জল,
সম্পদেরে পুণাকর্মে করেছ মঙ্গল,
শিখায়েছ স্বার্থ ত্যজি সর্ব হৃংথে সুথে
সংসার রাখিতে নিত্য ত্রন্মের সন্মুথে।

হে ভারত, তব শিক্ষা দিয়েছে যে ধন বাহিরে তাহার অতি অল্প আয়োজন, দেখিতে দীনের মতো, অন্তরে বিস্তার তাহার ঐশ্বর্য যত।

আজি সভ্যতার
অন্তর্থীন আড়ম্বরে, উচ্চ আফালনে,
দরিক্রন্ধরপুষ্ট বিলাসলালনে,
অগণ্য চক্রের গর্জে মুখর ঘর্ষর
লোহবান্থ দানবের ভীষণ বর্বর
রুদ্ররক্ত-অগ্নিদীপ্ত পরম স্পর্ধায়
নিঃসংকোচে শান্তচিত্তে কে ধরিবে, হায়,
নীরবগোরব সেই সৌম্য দীনবেশ
স্থবিরল— নাহি যাহে চিন্তাচেষ্টালেশ।
কে রাখিবে ভরি নিজ অন্তর-আগার
আগ্নার সম্পদরাশি মঙ্গল উদার।

অন্তরের সে সম্পদ ফেলেছি হারায়ে।
তাই মোরা লজ্জানত; তাই সব গায়ে
ক্ষ্পার্ত গুর্ভর দৈশ্য করিছে দংশন;
তাই আজি ব্রাহ্মণের বিরল বসন
সম্মান বহে না আর; নাহি ধ্যানবল,
শুধ্ জ্পমাত্র আছে, শুভিষ ক্বেল;
চিত্তহীন অর্থহীন অভ্যস্ত আচার—

সন্তোষের অন্তরেতে বীর্য নাহি আর, কেবল জড়হপুঞ্চ; ধর্ম প্রাণহীন ভার-সম চেপে আছে আড়াই কঠিন। ভাই আজি দলে দলে চাই ছুটিবারে পশ্চিমের পরিত্যক্ত বন্ধ লুটিবারে লুকাতে প্রাচীন দৈয়া। রুধা চেষ্টা ভাই, তব সজ্ঞা লক্ষাভরা চিত্ত যেখা নাই। শক্তি মোর অতি অল্প হে দীনবংসল, আশা মোর অল্প নহে। তব জলস্থল তব জীবলোক -মাঝে যেথা আমি যাই, যেথায় দাঁড়াই আমি, সর্বত্রই চাই আমার আপন স্থান। দানপত্রে তব তোমার নিখিলখানি আমি লিখি লব।

> আপনারে নিশিদিন আপনি বহিয়া প্রতি ক্ষণে ক্লান্ত আমি। প্রান্ত সেই হিয়া তোমার সবার মাঝে করিব স্থাপন তোমার সবারে করি আমার আপন। নিজ ক্ষুত্র তুঃখ স্থুখ জ্বলঘটসম চাপিছে তুর্ভর ভার মন্তকেতে মম। ভাঙি তাহা ডুব দিব বিশ্বসিন্ধনীরে, সহজে বিপুল জল বহি যাবে শিরে।

মাঝে মাঝে কভূ যবে অবসাদ আসি অস্তরের আলোক পলকে ফেলে গ্রাসি, মন্দপদে যবে প্রাস্তি আসে তিল তিল, তোমার পূজার বৃস্ত করে সে শিপিল ম্রিয়মাণ— তথনো না যেন করি ভয়, তথনো অটল আশা যেন জেগে রয় তোমা-পানে।

> ভোমা-'পরে করিয়া নিভর সে প্রান্তির রাত্রে যেন সকল অস্তর নির্ভয়ে অর্পণ করি পথ্য লিভলে নিদ্রারে আহ্বান করি। প্রাণপণ বলে ক্লাস্তচিত্তে নাহি তুলি কীণ কলরব ভোমার প্রার অভি দরিত্র উৎসব।

> > রাত্রি এনে দাও ভূমি দিবদের চোখে আবার জাগাতে ভারে নবীন আলোকে।

তব কাছে এই মোর শেষ নিবেদন—
সকল ক্ষীণতা মম করহ ছেদন
দূঢ়বলে, অন্তরের অন্তর হইতে,
প্রভু মোর। বীর্য দেহো স্থথের সহিতে
স্থথেরে কঠিন করি। বীর্য দেহো তথে
যাহে ত্বংথ আপনারে শান্ত স্মিতমুথে
পারে উপেক্ষিতে। ভকতিরে বীর্য দেহো
কর্মে যাহে হয় সে সফল, প্রীতি স্নেহ
পুণা ওঠে ফুটি। বীর্য দেহো ক্ষুদ্রজনে
না করিতে হীনজ্ঞান, বলের চরণে
না লুটিতে। বীর্য দেহো চিত্তেরে একাকী
প্রত্যহের তুচ্ছতার উপ্পে দিতে রাখি।

বীর্য দেহো তোমার চরণে পাতি শির অহর্নিশি আপনারে রাখিবারে স্থির। সংসারে মোরে রাখিয়াছ যেই ঘরে
সেই ঘরে রব সকল ছু:খ ভূলিয়া।
করুণা করিয়া নিশিদিন নিজ করে
রেখে দিয়ো ভার একটি ছুয়ার খুলিয়া।

মোর সব কাজে মোর সব অবসরে
সে তুয়ার রবে ভোমারি প্রবেশ- হরে,
সেপা হতে বায় বহিবে কদ্য- পরে
চরণ হইতে তব পদর্জ ভুলিয়া।
সে তুয়ার পূলি আসিবে ভূমি এ ঘরে,
আমি বাহিরিব সে তুয়ারখানি পুলিয়া।

আর যত সুধ পাই বা না পাই ৩৭ এক সুধ শুধু মোর ৩রে ভূমি বাখিয়ো। সে সুধ কেবল ভোমার আমার, প্রভু— সে সুধের পারে ভূমি জাগ্রত পাকিয়ো।

ভাচারে না ঢাকে আর যত মুখগুলি,
সংসার যেন ভাচাতে না দেয় পৃলি,
সব কোলাচল হতে ভারে তুমি তুলি
যতন করিয়া আপন অকে ঢাকিয়ো।
আর যত স্থাপ ভকক ভিক্ষাকৃলি
সেই এক সুধ মোর ভরে তুমি রাখিয়ো।

> ত্থ পশে যবে মর্মের মাঝখানে তোমার লিখন-স্বাক্ষর যেন আনে, রুক্ষ বচন যতই আঘাত হানে সকল আঘাতে তব স্থর উঠে জাগিয়া। শত বিশ্বাস ভেঙে যদি যায় প্রাণে এক বিশ্বাসে রহে যেন মন লাগিয়া।

Barcode: 4990010203066
Title - Naibedya (1921)
Author - Tagore, Rabindranath
Language - bengali
Pages - 119
Publication Year - 1921
Barcode EAN.UCC-13

